हँसती दुनिया

वर्ष 41 • अंक 7 • जुलाई 2014

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41
अंक 7

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

जुलाई
2014

स्तम्भ

सबसे पहले	4
कभी न भूलो	6
वर्ग पहेली	10
जन्म दिन मुबारक	12
समाचार	17
सम्पूर्ण अवतार बाणी	20
भैया से पूछो	36
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	64

चित्रकथा

दादा जी	13
चम्पू	52
फोटो फीचर	56–58

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

परशुराम का पराक्रम	शिखा जोशी 7
पानी है अनमोल	नीरु तनेजा 27
ईर्ष्या का फल	वैदेही शर्मा 32
मूर्ख क्यों कहलाने लगा गधा	कमल सीगानी 40

कविताएं

पानी को सहेजें	राजकुमार जैन 'राजन' 5
इन्द्रधनुष की बात	घमण्डी लाल अग्रवाल 11
बरसा पानी	दिनेश दर्पण 19
भली सी होती बेटी	हरजीत निषाद 26
पर्यावरण बचाओ	डॉ. परशुराम शुक्ल 34
बादल आए–बादल आए	निखिल पाल 42
नदियां	गोविन्द भारद्वाज 51
विद्यालय हम नित जाएंगे	टेक ढींगरा चन्द 63

विशेष/लेख

ऐसी थी रजिया सुल्तान	प्रियंका चोटिया 21
सैकरीन का आविष्कार	राधेलाल 'नवचक्र' 23
काली बेन नदी के उद्धारक बलबीर सिंह सिंचेवाल	डॉ0 बानो सरताज 31
पल–पल आसमानी बिजली का कहर	कमल सीगानी 38
विज्ञान प्रश्नोत्तरी	घमण्डी लाल अग्रवाल 43
एक साहसी पक्षी : कोतवाल	अभिनंदन 44
चल पड़, आगे बढ़, सफल हो	मुकेश कुमार बतरा 59

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

आओ बदलें – फिर से

"समय बदल गया है; आज कोई किसी की बात नहीं सुनता, कोई भी विश्वास के काबिल नहीं; जब कोई मेरी नहीं सुनता तो मैं किसी की क्यों सुनूं?" इस तरह की बातें आजकल आम सुनने को मिलती हैं और यही चर्चा का विषय भी लगभग हर जगह होता है। आओ, सोचें कि सचमुच समय बदल गया है?

जब बच्चा पैदा होता है तो उसे सहारे की जरूरत होती है। वह खाने–पीने के लिए माँ या किसी भी दूसरे का आश्रय लेता है। धीरे–धीरे वह बड़ा होता है, अंगुली पकड़कर चलना सीखता है, भाषा सीखता है। अपनी बात को पहले वह रोकर कहता था लेकिन अब वह अपनी बात को कह सकता है। वह स्कूल जाता है, पढ़ता है, खेलता है, दोस्त बनाता है। अब वह अपना अधिक समय घर से बाहर भी बिताता है और गली–मोहल्ले, पड़ोस में आना–जाना उसे वही कुछ सीखा जाता है जो कुछ इस समय में हो रहा होता है।

बच्चे के शरीर का विकास भी हुआ और उसकी सोचने और समझने की शक्ति का भी; समय बदला–केवल बोलचाल की भाषा में क्योंकि वह बच्चा अब 15–20 वर्ष का हो चुका है। वास्तव में हमारे आस–पास के वातावरण ने बच्चे को छोटे से बड़ा होने तक बच्चे को ही बदल दिया, उसकी कोमलता को कठोरता में बदलने का काम उन सबने मिल कर किया, जो–जो बच्चे के सम्पर्क में आये।

अब वह बच्चा भी जिसके सम्पर्क में आएगा उनको वही कुछ सिखायगा जो कुछ उसने सीखा है। वह बच्चा भी अपने से छोटे बच्चों के साथ वही व्यवहार करेगा जो उसने सीखा है। इसलिए समय रहते ही बच्चे में उसकी कोमलता–पवित्रता को निखारने का प्रयत्न हमें करना है। नैतिक शिक्षा हमने देनी है। यही कार्य हँसती दुनिया का परिवार कर रहा है।

आओ, हम सब इसके सहयोगी बनें और अपने अच्छे आचरण से बच्चों की मानसिकता को संस्कारित करें। हम फिर यह कह सकेंगे– सच में समय बदल गया है, सारे कितने पवित्र, कोमल, निर्मल और विनम्र हैं।

– विमलेश आहूजा

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

पानी को सहेजें

पानी की है कमी इस कदर,
सूख गई हैं झीलें।
दरक गई उपजाऊ भूमि,
ताल रहे ना गीले।।

नदियों, कुओं, तालाबों से,
रूठ गया है पानी।
कहते हैं कुछ समझदार,
ये है अपनी नादानी।।

पर्यावरण बिगाड़ा हमने,
हरे पेड़ कांटे हैं।
पंछी का दाना छीना है,
दुःख सबको बांटे हैं।।

अभी वक्त है वर्षा का,
जल को चलो सहेजें।
खेतों में लहराएं फसलें,
इतना ही पानी भेजें।।

कभी न भूलो

– संग्रहकर्ता :
विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

★ जहाँ नम्रता से काम निकल आए, वहाँ उग्रता नहीं दिखनी चाहिए।
–प्रेमचन्द

★ जिसके मन में संतोष है, उसके लिए हर जगह सम्पन्नता है।
–संस्कृत लोकोक्ति

★ संयम सफलता की कुंजी है। –चाणक्य

★ सुख प्राप्ति का यह भेद नहीं है कि आपको जो अच्छा लगे आप वह कर सकें, बल्कि यह है कि जो आप करें, वह अच्छा हो।
–जे.एम.स्वेअर्टयंग

★ उस दिन को बेकार ही समझो, जिस दिन तुम हँसे नहीं।
–चेम्सफोर्ड

★ हमें बातचीत करते समय कम से कम बोलना चाहिए। यह नहीं कि अपनी ही अपनी कहते रहें, दूसरों की ज्यादा सुननी चाहिए।
–लांगफेलो

★ यदि तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारी प्रशंसा करें, तो पहले तुम दूसरों की प्रशंसा करना सीखो। – इमर्सन

★ जो दूसरों की बुराई करते हैं, वे खुद निन्दित होते हैं। – ऋग्वेद

★ जब–जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है।
– सुकरात

★ पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जबकि पड़ोसी से वैर करने वाला सम्पत्ति में भी दुःखी रहता है।
– रामप्रताप त्रिपाठी

★ जो अपने हिस्से का काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।
– महात्मा गाँधी

★ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा। – स्वेट मार्डेन

★ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता। – चिल्सन

★ अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है।
– हार्ट स्वेन्शर

परशुराम का पराक्रम

कार्तवीर्य अर्जुन के नाम से प्रसिद्ध एक राजा था, जिसकी एक हजार भुजाएं थीं। (यहाँ एक हजार भुजाओ से तात्पर्य महाबलशाली होना है।) उसने सम्पूर्ण पृथ्वी को अपने अधिकार में कर लिया। एक दिन राजा कार्तवीर्य समुद्र के किनारे विचर रहा था। वहाँ उसने अपने बल के घमण्ड में आकर बाणों की वर्षा से समुद्र को आच्छादित कर दिया। तब समुद्र ने प्रकट होकर उसके आगे मस्तक झुकाया और हाथ जोड़कर कहा– वीरवर! मुझ पर बाणों की वर्षा न करो। बोलो, तुम्हारी किस आज्ञा का पालन करूँ? तुम्हारे इन बाणों से मेरे अन्दर रहने वाले प्राणियों की हत्या हो रही है। उन्हें अभयदान दो।

कार्तवीर्य अर्जुन बोला– समुद्र। यदि कहीं मेरे समान धनुर्धर वीर मौजूद हो, जो युद्ध में मेरा मुकाबला कर सके तो उसका पता बता दो। फिर मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा।

समुद्र ने कहा– राजन्! यदि तुमने महर्षि जमदग्नि का नाम सुना हो तो उन्हीं के आश्रम पर चले जाओ। उनके पुत्र परशुराम जी तुम्हारा अच्छी तरह सत्कार कर सकते हैं।

तदन्तर, राजा कार्तवीर्य बड़े क्रोध में भरकर महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर परशुराम जी के पास जा पहुँचा और अपने भाई–बन्धुओं के साथ उन्हें अपमानित करने लगा। उसने अपने अपराधों से परशुराम जी को उद्विग्न कर दिया। फिर तो परशुराम का तेज प्रज्ज्वलित हो उठा। उन्होंने अपना फरसा उठाया और राजा की भुजाओं को काट डाला।

कहते हैं तदनन्तर परशुराम जी ने क्षत्रियों का इक्कीस बार संहार किया।

इस प्रकार एक–एक करके जब इक्कीस बार क्षत्रियों का संहार हो गया तो परशुराम जी को उनके पितामह की आकाशवाणी सुनाई दी– 'बेटा परशुराम! इस हत्या के कार्य से निवृत्त हो जाओ। भला बारंबार इन क्षत्रियों के प्राण लेने में तुम्हें कौन–सा लाभ दिखाई देता है? तुम ब्राह्मण (ब्रह्मज्ञानी) हो, तुम्हारे हाथ से राजाओं का वध होना उचित नहीं है। उन्होंने इतिहास की एक कहानी सुनाई– अलर्क नाम से प्रसिद्ध एक

कथा महाभारत से : शिखा जोशी

राजर्षि थे, वे बड़े ही तपस्वी, धर्मज्ञ, सत्यवादी, महात्मा और दृढ़–प्रतिज्ञ थे। उन्होंने पृथ्वी को जीतकर अत्यन्त दुष्कर पराक्रम कर दिखाया था।

इसके पश्चात् उनका मन सूक्ष्म तत्व की खोज में लगा। अब वे सारे कर्म त्यागकर एक वृक्ष के नीचे जा बैठे और सूक्ष्म तत्व की खोज के लिए विचार करने लगे।

अलर्क बोले– मुझे मन से ही बल प्राप्त हुआ है, अतः वही सबसे प्रबल है। मन को जीत लेने पर ही मुझे स्थायी विजय प्राप्त हो सकती है। मैं इन्द्रियरूपी शत्रुओं से घिरा हुआ हूँ, इसलिए बाहर के शत्रुओं पर हमला न करके इन भीतरी शत्रुओं को ही अपने बाणों का निशाना बनाऊँगा। यह मन चंचलता के कारण सभी मनुष्यों से तरह–तरह से कर्म कराता रहता है, अतः अब मैं मन पर ही तीखे बाणों का प्रहार करूँगा।

मन बोला– अलर्क! तुम्हारे ये बाण मुझे किसी तरह नहीं बांध सकते। यदि इन्हें चलाओगे तो तुम्हारे ही मर्मस्थलों को चीर डालेंगे और उस अवस्था में तुम्हारी ही मृत्यु होगी; अतः और किसी बाण का विचार करो, जिससे तुम मुझे मार सको।

यह सुनकर अलर्क ने थोड़ी देर तक विचार किया, इसके बाद वे नासिका को लक्ष्य करके बोले– 'मेरी यह नासिका अनेकों प्रकार की सुगन्धियों का अनुभव करके भी फिर उन्हीं की इच्छा करती है, इसलिए इसी को तीखे बाणों से मार डालूँगा।

नासिका बोली– अलर्क! ये बाण मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इनसे तो तुम्हारे ही मर्म विदीर्ण होंगे और तुम्हीं मरोगे। अतः मुझे मारने के लिए और तरह के बाणों का प्रबन्ध करो।

अब अलर्क कुछ देर विचार करने के बाद जीभ को लक्ष्य करके कहने लगे– यह जीभ स्वादिष्ट रसों का उपभोग करके फिर उन्हें ही पाना चाहती है। इसलिए अब इसी के ऊपर अपने तीखे बाणों का प्रहार करूँगा।

जीभ बोली– अलर्क! ये बाण मुझे नहीं छेद सकते, ये तो तुम्हारे ही मर्मस्थलों को बीधकर तुम्हें ही मौत के घाट उतारेंगे; दूसरे प्रकार के बाणों का प्रबन्ध सोचो, जिनकी सहायता से तुम मुझे भी मार सकोगे।

यह सुनकर अलर्क कुछ देर तक सोचते–विचारते रहे, फिर त्वचा पर कुपित होकर बोले– यह त्वचा नाना प्रकार के स्पर्शों का अनुभव करके फिर उन्हीं की अभिलाषा किया करती है, अतः नाना प्रकार के बाणों से मारकर इसे विदीर्ण कर डालूँगा।

त्वचा बोली– अलर्क! ये बाण मुझे अपना निशाना नहीं बना सकते, ये तो तुम्हारा ही मर्म विदीर्ण करेंगे और मर्म विदीर्ण होने पर तुम्हीं मौत के मुख में पड़ोगे। मुझे मारने के लिए तो दूसरी तरह के बाणों की व्यवस्था सोचो।

त्वचा की बात सुनकर अलर्क ने थोड़ी देर तक विचार किया; फिर नेत्र को सुनाते हुए कहा– ये आँख भी अनेकों बार सुन्दर–सुन्दर रूपों का दर्शन करके पुनः उन्हीं को देखना चाहती है। अतः इसे भी अपने तीखों तीरों का निशाना बनाऊँगा।

आंख बोली– अलर्क! ये बाण मुझे नहीं छेद सकते, तुम्हारे ही मर्म स्थलों को बींध डालेंगे और मर्म विदीर्ण हो जाने पर तुम्हें ही जीवन से हाथ धोना पड़ेगा। अतः दूसरे प्रकार के बाणों का प्रबन्ध सोचो, जिनकी सहायता से तुम मुझे मार सकोगे।

तब अलर्क ने पुनः सोचकर कहा– यह बुद्धि अपनी प्रज्ञा शक्ति से अनेकों प्रकार का निश्चय करती है। अतः इसी के ऊपर अपने तीक्ष्ण बाणों का प्रहार करूँगा।

बुद्धि ने कहा– अलर्क! ये बाण मेरा स्पर्श भी नहीं कर सकते। इनसे तुम्हारा ही मर्म विदीर्ण होगा और तुम्ही मरोगे। जिनकी सहायता से मुझे मार सकोगे, ये बाण तो कोई और ही हैं। इनके विषय में विचार करो।

तदन्तर, अलर्क ने उसी पेड़ के नीचे बैठकर घोर तपस्या की व एकाग्रचित होकर विचार करने लगे। बहुत दिनों तक निरंतर सोचने–विचारने के बाद उन्हें प्रभु–भक्ति से बढ़कर दूसरा कोई कल्याणकारी साधन (प्रभु–सुमिरण) नहीं प्रतीत हुआ। अब वे मन को एकाग्र करके स्थिर आसन में बैठ गये और ध्यान योग का साधन करने लगे। इस एक ही बाण (प्रभु–सुमिरण) से उन्होंने समस्त इन्द्रियों को वश में कर लिया। इस सफलता से राजर्षि अलर्क को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने इस गाथा का गान किया– अहो! बड़े कष्ट की बात है कि अब तक मैं बाहरी कामों (मायावी कार्यों) में ही लगा रहा और भोगों की तृष्णा से आबद्ध होकर राज्य (माया) की ही उपासना करता रहा। किसी सन्त कृपा से 'ध्यान योग' (ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति एवं प्रभु सुमिरण) से बढ़कर दूसरा कोई उत्तम सुख का साधन नहीं है।

पितामह ने कहा– बेटा! तुम इन सब बातों को समझ लो। तुम क्षत्रियों का नाश न करो। तपस्या (प्रभु–भक्ति) में लग जाओ, उसी से तुम्हारा कल्याण होगा।

वर्ग पहेली

–प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

बाएं से दायें →

1. इस वाक्य में छुपा धरती का एक पर्यायवाची शब्द ढूंढिए : संतोष यादव सुधा की सहेली है।
4. इनमें से जो एक पुरातन सन्त का नाम है : तुकाराम, बलराम, अभिमन्यु, धृतराष्ट्र।
7. पुरातन कृष्ण भक्त ..... बाई पहली भारतीय महिला थी जिसकी फोटो डाक टिकट पर छपी थी।
9. पुष्कर का मेला राजस्थान के जिस शहर में आयोजित किया जाता है।
10. असम राज्य की राजधानी।
12. ..... तोड़ कर लाना यानि असंभव काम कर दिखाना।
13. भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम सन् अठ्ठारह सौ .... में लड़ा गया।

ऊपर से नीचे ↓

1. बेमेल शब्द छांटिए : वहमी, बहरा, अंधा, लंगड़ा।
2. शुद्ध शब्द छांटिए : धातु/धातू।
3. नादिरशाह जिस कोहेनूर को भारत से लूट कर ले गया था, वह कोहेनूर एक ..... था।
5. उत्तर प्रदेश का एक औद्योगिक नगर जहाँ प्रसिद्ध जे. के. मन्दिर स्थित है।
6. भारत की एकमात्र महिला जिसे नोबेल पुरस्कार और भारत रत्न पुरस्कार दोनों से सम्मानित किया गया है।
8. शुद्ध शब्द छांटिए : राक्शस/राक्षस।
10. जनवरी महीने की 26 तारीख को गणतन्त्र ..... के रूप में मनाया जाता है।
11. ख्याली .... पकाना यानि कोरी कल्पना में डूबे रहना।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

बालगीत : घमंडीलाल अग्रवाल

इन्द्रधनुष की बात

रंग–बिरंगे इन्द्रधनुष ने,
यही बताई बात।
मिलजुल कर चलने में सुख है,
करें न उत्पात।

सरिता के कल कल के स्वर में,
हरदम रहे रवानी।
भौरों की गुनगुन में मिलती,
कोई नई कहानी।

कैसा थकना क्या घबराना,
दिन हो या रात।

फूल कमल का कीचड़ में भी,
अपना धर्म निभाता।
पूरी दुनिया से समता का,
सूरज रखता नाता।

चंदा, तारे, जुगनू देते,
अंधियारे को मात।

चींटी होती है नन्हीं–सी,
फिर भी हिम्मत रखती।
मकड़ी अपना जाल बुनकर,
मेहनत का फल चखती।

छोटे–बड़े सभी जीवों की,
होती अलग बिसात।

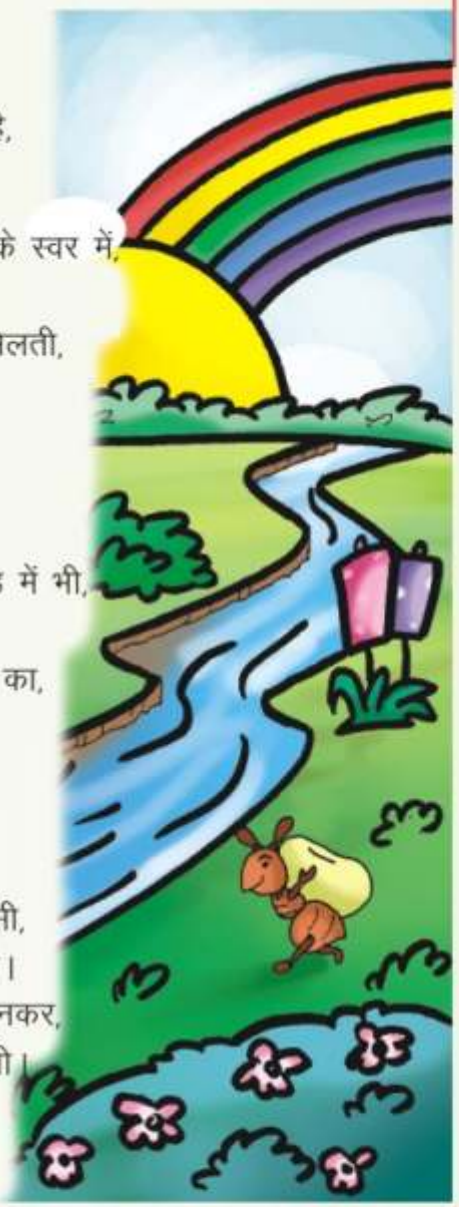

जन्म दिन मुबारक

गनीव

तमन्ना (यू.एस.ए.)

अरमान (रामपुराफूल)

पिहू (नैनी)

शशिकान्त (मूड)

हितिषा (नांदेड़)

हिमांशु (कैथल)

विशाल (कठुआ)

अनुष्का (इलाहाबाद)

खुशी (जोधपुर)

अंशुमान (इलाहाबाद)

आभिष (भटिण्डा)

दिवित (जम्मू तवी)

सृष्टि (मीनापुर)

तरुण (अमरोली)

हार्दिक (सूरत)

दक्ष (चण्डीगढ़)

प्रिशा (मण्डी डबवाली)

समदर्श (हेमाडी)

शैलेन्द्र (सिडको)

हँसज (कोल्हापुर)

लविश (जोधपुर)

साधिक (जम्मू)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म दिनांक.....वर्ष.....

पता .....

.....

दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक बार की बात है। दो किसान एक - दूसरे के अच्छे मित्र और पड़ोसी भी थे।
एक राम और दूसरा श्याम। दोनों प्रतिदिन एक साथ खेत में जाते।

एक दिन राम और श्याम में किसी बात पर कहा-सुनी हो गई जिसके कारण राम ने श्याम को बहुत खरा - खोटा सुना दिया।
दोनों लड़-झगड़ कर अपने - अपने घर चले गये।
जब राम रात को आराम से सारी बात सोचने लगा, तो उसे लगा की उसने श्याम को बहुत कुछ उल्टा - सीधा बोल दिया। जबकि श्याम का कोई दोष नहीं था।

अब राम को अपनी गलती का एहसास हुआ और वह बहुत दुःखी हुआ।
अगले दिन सुबह उठते ही वह गाँव के एक बुजुर्ग और समझदार व्यक्ति के पास गया और उसे सारी बात बताई और अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा।
उस बुजुर्ग ने राम को खूब सारे पंख दिये और कहा कि यह गाँव के साथ शहर को जाते रास्ते के बीचो-बीच रख आओ।

राम ने वैसा ही किया।
बुजुर्ग ने अब सारे पंख वापस लाने को कहा। राम थोड़ा हैरान हुआ पर वह पंख लेने चला गया परन्तु वे सब पंख अब उड़ चुके थे और राम खाली हाथ ही वापस आ गया।
तब बुजुर्ग ने कहा की ठीक ऐसे ही हमारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है हम आसानी से इन्हे अपने मुख से निकाल तो सकते है, परंतु चाह कर भी वापस नहीं ले सकते। इसलिए हमें बहुत ही सोच समझकर बोलना चाहिए।

'सूरजमुखी' पृथ्वी जैसे ग्रहों की खोज करेगा

वाशिंगटन। 'नासा' ने बड़े सूरजमुखी की तरह दिखने वाले एक अंतरिक्ष यान का विकास किया है जो पृथ्वी से मिलते–जुलते ग्रहों की तलाश करेगा। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' के अनुसार कि इस अंतरिक्ष यान का इस्तेमाल पृथ्वी जैसे ग्रहों की तस्वीरें लेने के लिए हो सकता है।

'नासा' के अनुसार ऐसे ग्रहों की तलाश की जा रही है जो आकार, बनावट और तापमान में पृथ्वी जैसे हैं। ये ग्रह चट्टानी हैं और इन पर पानी के लिए अनुकूल तापमान है। ये बहुत ज्यादा गर्म नहीं हैं, बहुत ज्यादा ठण्डे भी नहीं हैं तथा इन पर जीवन संभव है। शोधकर्ताओं का सामान्य तौर पर मानना है कि यह सिर्फ समय की बात है और पृथ्वी के जुड़वा ग्रह भी मिल सकते हैं।

कुदरत का कमाल

दुनिया में कुदरत ने कई ऐसे कमाल किये हैं जिनको जानने के बाद बड़ा आश्चर्य भी होता है। इसी क्रम में कुदरत ने कुछ मछलियां ऐसी भी बनाई हैं जो उड़ सकती हैं। यह उष्णकटिबंधीय सागरों में रहती हैं। इन मछलियों के पंख सिर के पास होते हैं। इसलिए जब यह उड़ती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह कोई चिड़िया उड़ रही है। ये मछलियां 400 मीटर तक 70 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से पानी के ऊपर उड़ सकती है।

यह जानने के बाद की उड़ने वाली मछली पानी के ऊपर और पानी के भीतर दोनों जगहों पर कैसे जीवित रह सकती है, तो आपको बता दें जिस तरह मेंढक और मगरमच्छ पानी के अन्दर और पानी के बाहर दोनों जगह रह सकते हैं कुछ इसी तरह यह मछली भी कुछ समय के लिए पानी के ऊपर रह सकती हैं।

सबसे अधिक विषम परिस्थितियों में रहने वाला जीव

'वॉटर बीयर'

पृथ्वी पर सबसे अधिक विषम परिस्थितियों में रहने वाला जीव टारडिग्रेड्स (वॉटर बीयर) है। इस जीव को ठण्ड में जमाया जाए, उबाला जाए, सुखाया जाए या रेडिएशन दी जाए लेकिन यह जीव मरता नहीं है। यह 200 साल तक जीता है। यह एक मिलीमीटर आकार का जीव आमतौर पर काई में रहता है। इसलिए समुद्र से लेकर ऊँचे पहाड़ों तक मिल जाता है।

टारडिग्रेड्स (वॉटर बीयर) की 900 प्रजातियां हैं। यह जीव –457 डिग्री सेल्सियस तक जीवित रह सकता है और 357 डिग्री तक की गर्मी झेल सकता है। इस जीव का 5700 ग्रे की रेडिएशन भी कुछ नहीं बिगाड़ पाती है जबकि मनुष्य और कई जानवरों की 10 से 20 ग्रे की रेडिएशन में मौत हो सकती है। वॉटर बीयर बिना पानी के दशकों तक जिंदा रह सकता है। वॉटर बीयर अंतरिक्ष में भी जीवित रह सकता है। इस जीव का मुख्य आहार पेड़–पौधों और पशुओं के 'सेल्स' होते हैं।

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

हँसती दुनिया हर माह पढ़ो, जीवन पथ पर आगे बढ़ो।

बालगीत : दिनेश 'दर्पण'

बरसा पानी

बादल छाये,
हवा चली
बिजली कड़की–
बरसा पानी ...
बूंदे नाचीं
छम–छमा–छम
मेंढक बोले–
बरसा पानी ...
नदिया हँसी
ताल लहराये
झरना गाये
बरसा पानी ...
पत्ते नहाये
पेड़ हर्षाये
टहनी बोली
बरसा पानी ...
आम आये,
जामुन खाये
हरियाली छाये
बरसा पानी ...

झरने कूदे
नाले गाये
बच्चे नहाये
बरसा पानी ...
नीड़ बसाओ
नीड़ बचाओ
पंछी अकुलाये –
बरसा पानी ...
कुऐ लबालब
सड़कें डूबी
बिजली गायब
बरसा पानी ...
स्कूल खुले
बच्चे हर्षाये
छाता बोला –
बरसा पानी ...

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 118

चरन धूड़ नूं मत्थे लायां हो जान्दा ए निर्मल चीत।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां सारी दुनियां बणदी मीत।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां खुशियां दे विच होन्दा वास।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां लहन्दी गल चों जम दी फास।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां हरि दरशन हो जान्दे ने।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां पाप पुन्न खो जान्दे ने।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां मुक जान्दा ए आवण जाण।
चरन धूड़ नूं मत्थे लायां जीआं दी होन्दी कल्याण।
चरन धूड़ मस्तक ते लाईये जे कोई सन्त फकीर मिले।
कहे अवतार बड़ा वडभागी जिस नूं एह अक्सीर मिले।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सद्गुरु चरणों की धूल को यदि मस्तक पर धारण कर लो अर्थात् गुरु चरणों में अपने अहंकार को छोड़कर समर्पित हो जाओ तो मन साफ पवित्र हो जाता है। तब सारी दुनिया ही अपनी मित्र हो जाती है। इसलिए तब हर समय प्रसन्नता की स्थिति हमेशा मन में बनी रहती है। इस प्रकार मृत्यु का भय अर्थात् जम की फास से भी मुक्ति मिल जाती है।

यदि गुरु के समक्ष समर्पित हो जाएं तो प्रभु निराकार के दर्शन भी हो जाते हैं। उसके कारण सभी पाप व पुण्य (जिनके कारण चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाने पड़ते हैं।) सभी समाप्त हो जाते हैं व जीवों (मानव) का कल्याण हो जाता है।

अन्त में बाबा अवतार सिंह जी निर्णय दे रहे हैं कि वह मनुष्य बड़ा भाग्यशाली हैं जिसे यह नामधन (ब्रह्मज्ञान) की अचूक औषधि (राम बाण जैसी दवा) मिल जाये।

ऐतिहासिक कहानी : प्रियंका चोटिया

ऐसी थी रजिया सुल्तान

बच्चों, यह कहानी है रजिया सुल्तान (1205–1240 ई.) की। मध्यकालीन भारत की पहली महिला शासिका, जिसने अपने पिता की उम्मीदों को पूरा किया। रजिया प्रथम तुर्क सुल्तान इल्तुतमिश की लाडली थी। बहुत गर्व था पिता को उसकी काबलियत पर। वह समझदार, साहसी, योग्य और बुद्धिमान थी। उन्होंने उसे घुड़सवारी, तीरंदाजी और अस्त्र–शस्त्र चलाना सिखाया। एक जाबांज सिपाही की तरह युद्ध का कौशल सिखाया। राज करने के गुर सिखाए। वह चाहते थे कि उनके बाद वह राज–काज संभाले। एक दिन वह उनकी उम्मीदों पर खरी उतरी थी। वह दिल्ली की सुल्तान बनी। इल्तुतमिश के बेटे भी थे पर उन्हें उन पर कतई भरोसा नहीं था।

इल्तुतमिश ने अपने जीते जी यह घोषणा कर दी थी कि उनके बाद रजिया ही शासन की बागडोर संभालेगी। लेकिन उनकी बेगम शाह तुर्कान को यह रास नहीं आया। वह अपने बेटे रूकुनुद्दीन फिरोजशाह को सुल्तान बनाना चाहती थी, उसने इल्तुतमिश के फैसले का विरोध किया। कहा– "भला एक औरत सुल्तान कैसे बन सकती है? परदे में रहकर राज करना आसान नहीं है और परदे से उसका बाहर आना इज्जत के खिलाफ है।" लेकिन इल्तुतमिश ने अपना फैसला नहीं बदला। वह देश का शासन रूकुनुद्दीन के हाथ में नहीं

सौंप सकते थे। उसकी आदतें अच्छी नहीं थीं। वह आरामतलब और अयोग्य था। इसलिए उन्होंने अपने वसीयतनामे में रजिया को अपना उत्तराधिकारी बताया और लिखा कि उसके मरने के बाद सल्तनत रजिया को सौंपी जाए।

कुछ दिन बाद बीमारी के कारण इल्तुतमिश का निधन हो गया। इल्तुतमिश के दरबार में चालीस गुलाम सरदारों का एक संगठन था, जिसे चालीसा के नाम से जाना गया। उन्हें जब इल्तुतमिश के वसीयतनामे की जानकारी मिली तो वे भड़क गये। स्त्री की हकुमत में रहना उन्हें गंवारा नहीं था। इसलिए बेगमशाह तुर्कान के साथ मिलकर उन्होंने रूकुनुद्दीन फिरोजशाह को सुल्तान बना दिया। पर उसे तो राज–काज से कोई मतलब ही नहीं था। नतीजा यह हुआ कि चालीसा के सरदार मनमानी करने लगे। वे प्रजा पर जुल्म ढाने लगे। लोग कब तक सहते? आखिर एक दिन ऐसा विद्रोह भड़का कि मुल्तान, झांसी, लाहौर और बदायूं के सरदारों ने रूकुनुद्दीन फिरोजशाह को गद्दी से उतार उसे और उसकी माँ को बंदी बना लिया।

1236 ई. में रजिया ने सिंहासन संभाला। वह दिल्ली सल्तनत की पहली महिला शासिका बनी। उसने सबसे पहले परदे की प्रथा का सख्ती से विरोध किया। वह पुरुष वेश में रहती। जनता की तकलीफों को खुद उनके पास जाकर सुनती। हिन्दुओं पर अत्याचार की दृष्टि से लगाया गया जजिया कर समाप्त किया। इससे हिंदू इतने खुश हुए कि वे रजिया को सुल्तान के रूप में पसंद करने लगे। राज–काज में चतुर रजिया ने कानून व्यवस्था में सुधार किया। ■

कुछ रोचक जानकारियाँ : जीव–जन्तुओं के बारे में

- तोता 60 तरह के शब्द बोल सकता है।
- मक्खी की छलांग उसके शरीर की तुलना में 60 गुना होती है।
- बिल्ली अपनी जिन्दगी का आधा समय सोकर व्यतीत करती है।
- छिपकली कभी पानी नहीं पीती।
- तितली के 12,000 आँखें होती हैं।

– संग्रहकर्ता : विभा वर्मा

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

सैकरीन का आविष्कार

गरमी का महीना था। संध्या की वेला थी। आकाश साफ था। अध्यापक विजय सेन ने सेठ जी के पुत्रों से कहा, "आज पार्क में हम लोग घूमने चलेंगे।"

"हाँ चलिए," तीनों ने हामी भरी।

अगले ही क्षण वे पार्क में थे। वहाँ पहुँचकर वे खुश हुए। तीनों लड़के पार्क में इधर–उधर उछल–कूद करने लगे।

थोड़ी देर बाद वे पार्क की एक बेंच पर जा बैठे। वहाँ से कुछ ही दूर पर पार्क के बाहर एक ठेला वाला शर्बत बेच रहा था। सुमन ने शर्बत पीने की इच्छा जाहिर की। शशि और सन्तोष भी पीछे नहीं रहे।

अध्यापक महोदय ने तीनों को शर्बत पीने की इजाजत दे दी। जब वे शर्बत पीकर लौटे तो अध्यापक महोदय ने पूछा, "शर्बत कैसा लगा?"

"मीठा", सभी एक साथ बोले।

"मीठा क्यों था?" अध्यापक महोदय ने सन्तोष से सवाल किया।

"चीनी घुली–मिली थी", उसने जवाब दिया।

"ऐसी बात नहीं है", अध्यापक बोले।

"तो फिर?"

"जल में चीनी की जगह सैकरीन दिया गया है।

"थोड़ा–सा सैकरीन बहुत अधिक जल को मीठा बना देता है।" अध्यापक महोदय ने बताया।

"अजीब बात है", तीनों हैरान थे।

"जानते हो, सैकरीन का आविष्कार कैसे हुआ?"
अध्यापक विजय सेन ने तीनों से पूछा।

"हम नहीं जानते हैं, आप ही इसके बारे में बताइए न!"
तीनों उत्सुक हो उठे।

"फिर सुनो", वह बोले।

"कहिए", सबकी नजर अध्यापक महोदय के चेहरे पर जा टिकी।

"एक वैज्ञानिक था। अपनी प्रयोगशाला में वह एक बार कोलतार से प्राप्त 'टालुइन' नामक कार्बनिक यौगिक पर कुछ कार्य कर रहा था। इस सिलसिले में उसने उस यौगिक पर कई रसायनों से भी प्रयोग किये।" कहते–कहते अध्यापक महोदय अपनी जगह से उठ खड़े हुए। फिर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाई, "घंटो प्रयोग वह करता रहा। भोजन का समय हो गया। इसके लिए उसे बुलावा आया। मगर वह अपने प्रयोग में ऐसा खोया रहा कि खाने की तनिक भी सुधि नहीं रही। दूसरी बार बुलाहट हुई। उसने उसे भी टाल दिया। जब कई बार बुलाहट हुई तो लाचार हो उसे अपनी जगह से उठना पड़ा।"

"फिर क्या हुआ?" सुमन ने जानना चाहा।

अध्यापक महोदय ने उसकी जिज्ञासा शान्त करने के लिए आगे कहा, "वह वैज्ञानिक झटपट भोजन कर पुनः अपने प्रयोग में भिड़ जाना चाहता था। इस जल्दबाजी में वह भोजन करने से पहले अपने हाथ को अच्छी तरह धो भी नहीं सका। जैसे–तैसे भोजन करना उसने शुरू कर दिया।..."

"अच्छा तो", शशि बीच में बोल उठा।

"जानते हो, जब उस वैज्ञानिक ने भोजन का पहला कौर मुँह में डाला तो वह उसे काफी मीठा जान पड़ा। फिर उसने गौर से भोजन–सामग्री की ओर निहारा। उसके अचरज का ठिकाना न रहा क्योंकि उसमें कोई भी ऐसी चीज नहीं थी, जो मीठी हो, मीठी लगे", इतना कहकर अध्यापक महोदय चुप हो गए।

"ऐसा कैसे हुआ?" सन्तोष हैरान था। दूसरे भाई भी।

"बताता हूँ", अध्यापक महोदय ने रहस्य खोला", उस वैज्ञानिक ने तब केवल अपनी ऊँगलियों को जीभ से चाटना शुरू किया। उसे अपनी ऊँगलियाँ भी मीठी जान पड़ी। नतीजा हुआ कि उसका वैज्ञानिक दिमाग तेजी से क्रियाशील हो उठा। झट उसके दिमाग में एक बात आयी, यह किसी रसायन का असर है।"

"तो फिर?" शशि ने बेसब्री जाहिर की।

"अब उस वैज्ञानिक का ध्यान भोजन से उचट गया। उसने बीच में ही अपना भोजन छोड़ दिया और प्रयोगशाला की ओर जा बढ़ा। वहाँ आकर उसने एक–एक कर प्रत्येक रसायन को चखना शुरू किया, जिसे वह इसके पहले परीक्षण के कार्य में उपयोग में ले रहा था। थोड़ी देर बाद मीठा लगने वाला रसायन उसकी पकड़ में आ गया। पकड़ में आते ही उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।" अध्यापक विजय सेन ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, "यह संयोग ही था कि इस तरह की एक साधारण–सी घटना से 'सैकरीन' का आविष्कार हुआ। कई चीजों में अब इसका उपयोग किया जा रहा है, हो रहा है। मधुमेह के मरीजों के लिए यह काफी उपयोगी सिद्ध हुआ है।"

"उस वैज्ञानिक का क्या नाम है जिसने 'सैकरीन' का आविष्कार किया?" तीनों ने एक स्वर से अध्यापक जी से पूछ डाला।

"उसका नाम है–फालबर्ग।" अध्यापक ने बताया और फिर पूछा, "अब तो सैकरीन के आविष्कार के बारे में तुम सब अच्छी तरह जान गए?"

"बिल्कुल", तीनों ने कहा। फिर वे सभी घर की तरफ लौट चले। ■

यह भी जानें – संग्रहकर्त्ता : विकास कुमार 'बंसल' (बछवाड़ा, बेगूसराय)

★ आस्ट्रेलिया की नाईजीस्क्रब ऐसी चिड़िया है जो दूसरी चिड़िया की हु–ब–हु नकल कर लेती है।

★ एशिया की मिल्क मछली ऐसी मछली है जो पानी के बाहर कई दिनों तक जीवित रह सकती है।

★ ब्राजील के जंगल में श्वहा–शहद मिलता है।

★ मलेशिया में आग बरसाने वाला पेड़ है।

★ गोन्ट गोलिफयर ने गुब्बारे की खोज सर्वप्रथम की थी।

★ आंख की पुतली शरीर का ऐसा भाग है जो जन्म से मृत्यु तक एक ही आकार का होता है।

★ लगभग एक लाख कि.मी. एक सामान्य व्यक्ति अपने जीवन काल में चलता है।

प्रस्तुति : हरजीत निषाद

भली सी होती बेटी

माँ की गोद में बड़े शान से हँसती बढ़ती बेटी।
ठुमक ठुमक कर पिता की उंगली पकड़ के चलती बेटी।
स्नेह की धरती, प्यार के आंचल तले है पलती बेटी।
घर का आंगन महक उठा है, जब जब हँसती बेटी।

कांधे पर सुन्दर सा बस्ता बहुत सुहाती बेटी।
सुबह सुबह तैयार हुई विद्यालय जाती बेटी।
घर हो या स्कूल ध्यान पढ़ने में लगाती बेटी।
लगनशील मनमोहक सबके मन को भाती बेटी।

देख पिता को लेकर पानी दौड़ी आती बेटी।
खुशी खुशी माँ के कामों में हाथ बंटाती बेटी।
सुस्त देखती जब माँ को तब सिर है दबाती बेटी।
घर में सबको दे अपनापन प्यार बढ़ाती बेटी।

शोभा घर की इज्जत दोनों कुल की होती बेटी।
प्यार की मूरत श्याम सलोनी भली सी होती बेटी।
बाबुल का घर छोड़ एक दिन बिदा है होती बेटी।
ओझल होते ही आंसू से नयन भिगोती बेटी।

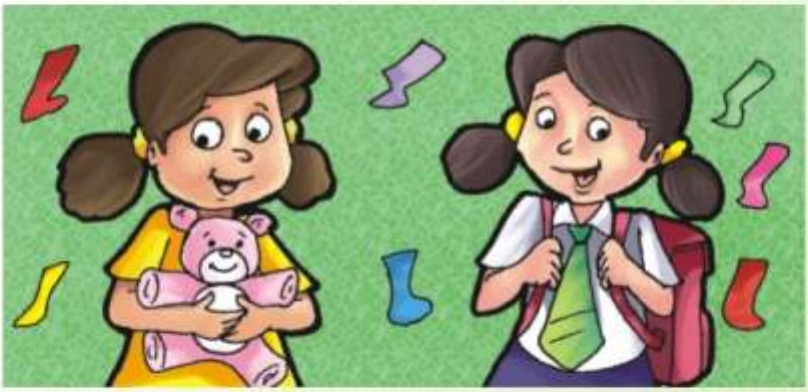

कहानी : नीरू तनेजा

पानी है अनमोल

पारस पढ़ाई में जितना होनहार था, उतना ही वह लापरवाह भी था। सबसे ज्यादा वह पानी के प्रयोग में लापरवाही बरतता था। नहाने का काम हो या अपनी साईकिल को धोने का काम वह पानी को बेरहमी से बहाता था। जब वह अपने दोस्तों के साथ घूमने जाता तो हर सार्वजनिक नल पर रूक कर वे पानी से खेलने लगते व पानी को खूब बहा देते। नल को बंद करना तो मानो उसे आता ही नहीं था। घर हो या बाहर वह नल को हमेशा खुला ही छोड़ देता था। उसके माता–पिता उसकी इस आदत से बेहद परेशान थे व उसे कई बार समझा भी चुके थे मगर वह था कि किसी की बात समझने को तैयार ही नहीं था।

एक बार पारस अपने माता–पिता के साथ किसी दूसरे शहर में अपनी दादी के पास जा रहा था। जब वह शहर के बीच बाजार में पहुँचे तो रास्ता जाम हो रहा था। उन्हें लगा कि यहाँ से निकलने में ही कई घंटे लग जायेंगे तो उसके पापा ने गाड़ी को दूसरी तरफ मोड़ लिया व उस बाजार को लांघने के लिए एक बस्ती की गलियों से निकलने लगे। पारस ने तो उन गंदी बस्तियों को देखकर ही मुँह सिकोड़ लिया। तभी उसका ध्यान वहाँ पर लगी भीड़ पर गया। वहाँ से उन्हें गाड़ी निकालने में काफी समय लग गया। इसी दौरान उसने देखा कि भीड़ वाले स्थान पर एक नल लगा था व वहाँ पर सभी लोग पानी भरने के लिए खड़े थे। सभी के हाथ में मटके, बाल्टियां व प्लास्टिक के डिब्बे थे जिनमें वे पानी भर–भर कर ले जा रहे थे। फिर तो उसे पूरी बस्ती में बस यही कुछ देखने को मिलता रहा। हर नल पर लोग बल्टियों के साथ कहीं लाईन बना कर खड़े थे तो कहीं झूँड बना कर लड़ाई–झगड़ा करने में लगे थे। हर जगह महिलाएं सिर पर पानी से भरे मटके रखकर व हाथों में पानी से भरी बाल्टियां लेकर जा रही थीं। उन्हें एक साथ इतना–इतना पानी ढोकर जाते हुए देखकर वह हैरान ही रह गया। कुछ घरों में से उसे

झगड़ने की आवाजें आ रही थी क्योंकि उन्होंने आते–जाते कुछ पानी लापरवाही से बहा दिया था। पानी के लिए इतनी मेहनत व झगड़े का माहौल देखकर तो पारस का मन ही पसीज गया। उसके पापा उसके मन की बात को समझ गये व इस समय उन्हें सुअवसर मिल गया उसे समझाने का।

पापा बोले– ''देखा बेटे। इन्हें पानी के लिए कितनी परेशानी होती है। असल में हम लोगों के पास अपने–अपने नल होते हैं व हम हम पानी को अपनी मर्जी से इस्तेमाल करते हैं और कुछ लोग पानी को बर्बाद भी कर देते हैं इसलिए इन लोगों के पास पूरा पानी नहीं पहुँच पाता। अब तुम खुद देखो। ये लोग थोड़ा–थोड़ा पानी भी कितनी मुश्किल से लेकर जा रहे हैं। अभी तो ये लोग पानी भर रहे हैं मगर जैसे ही नल में से पानी चला जाएगा ये लोग दोबारा पानी के आने का इंतजार करेंगे। तब तक तो इन्हें पीने का पानी भी नहीं मिल पाएगा?'' सुनकर पारस चुप रह गया क्योंकि उसके मन में कोई हचलच–सी मच गई थी।

अब पारस पानी के प्रति काफी सचेत हो गया था। कुछ ही दिन में उसके स्कूल में गर्मी की छुट्टियां आरम्भ हो गईं। पारस व उसके दोस्त सोच रहे थे कि इन छुट्टियों का सदुपयोग कैसे किया जाए? सभी चाहते थे कि इन दिनों कुछ 'स्पैशल' किया जाए। गीत, खेल, नृत्य वगैरह तो वे स्कूल के दौरान ही काफी सीख चुके थे। कुछ भी सीखने के लिए पैसे तो घरों में से काफी मिल जाते हैं मगर वे इस बार करें तो क्या करें? बातों ही बातों में पारस ने अपने दोस्तों से उस बस्ती का किस्सा भी बताया कि कैसे वहाँ के लोग पानी के लिए इतनी मेहनत करते हैं। तभी सन्नी ने भी बताया कि उनके नानी के गाँव में भी पानी बहुत दूर से भरकर लाना पड़ता है। वह यह देखकर काफी हैरान होता है जबकि यहाँ तो पानी खूब बहाया जाता है। हम ही नहीं बल्कि यहाँ के लोग भी एक बार नल खराब हो जाए तो जल्दी नल को ठीक ही नहीं करवाते। पानी चाहे दिन–रात बहता रहे।

इसी बात को लेकर उनके मन में एक योजना आई। उन्होंने स्वंय तो पानी को व्यर्थ न बहाने की कसम खाई ही साथ ही अन्य घरों में भी पानी न बहने देने की योजना बना ली।

अगले दिन सबने अपनी–अपनी जेब–खर्ची के पैसे इकट्ठे किये और उसे इकट्ठा करके एक पलंबर को बुला लिया। उसे उन्होंने कई दिन तक अपने साथ रहकर काम करने के लिए कहा। अब कुछ बच्चे कालोनी के हर घर में जाते। वहाँ के नल चैक करते। यदि कोई भी नल खराब होता तो उसे पलंबर से ठीक करवाते व आंईदा नल खराब न रखने व पानी को व्यर्थ न बहने देने की प्रार्थना करते। घर के मालिक बच्चों के इस कार्य की सराहना करते। यदि किसी घर में सभी नल ठीक होते तो उन्हें बड़े प्रेम से प्रार्थना करके कहते कि 'यह पानी काफी अनमोल है। कृपया इसे व्यर्थ न बहायें तभी हमारी ही तरह के अन्य लोगों के पास भी पानी जा सकेगा? उनके इस कार्य को निपटाने में कई दिन तो लग गये मगर इसका परिणाम बेहद शानदार रहा। हर तरफ बच्चों के कार्य की प्रशंसा तो होने ही लगी सभी घरों के नल भी

ठीक हो गये। अब कहीं भी व्यर्थ पानी नहीं बहता था। बच्चों के इस प्रशंसनीय कार्य की चर्चा अन्य कालोनियों में भी होने लगी।

पारस व उसके दोस्तों ने जब पलंबर का हिसाब किया तो उसने अपने कार्य के जो दाम पहले कहे थे उससे काफी दाम कम लिये क्योंकि वह भी उनके काम से काफी प्रभावित था। अतः उन बच्चों के काफी पैसे बच गये। अब वे दूसरी कालोनी में चले गये व वहाँ भी अपना अभियान चला दिया। उनके इन कार्यों को जारी रखने के लिए सभी बच्चों के माता–पिता ने भरपूर आर्थिक सहयोग दिया व वे पूरी छुट्टियों में अपने कार्य करते रहे। जब वे स्कूल गये तो उनके अंदर काफी आत्मसंतोष था कि उन्होंने अपने अवकाशकाल को व्यर्थ नहीं

जाने दिया। स्कूल की अध्यापकों व प्रधानाचार्य को भी उनके कार्यों की खबर लग चुकी थी। अतः स्कूल में सभी के सामने उन्हें पुरस्कृत किया गया। अब पारस व उसके दोस्त जान गये कि उन्होंने जो कार्य किया है उससे दूसरे लोगों को भी कितनी खुशी मिली है, इसका मतलब है पानी सचमुच अनमोल है।

आलेख : डॉ. बानो सरताज

काली-बेन नदी के उद्धारक

बलबीर सिंह सीचेवाल

बलबीर सिंह सीचेवाल दृढ़–निश्चय और साहस का उत्तम उदाहरण हैं। वह परोपकार और सेवा के जबर्दस्त समर्थक हैं। वह प्रायः कहा करते हैं कि ''ईश्वर की कृतियों, उस के रचे संसार, उसके बनाए लोगों का संरक्षण, सौंदर्यीकरण एवं सक्षमीकरण तीर्थयात्रा से श्रेयस्कर है।''

बलबीर सिंह ने इस बात को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। काली बेन नदी का उद्धार करके उन्होंने प्रकृति के संरक्षण का जो काम किया है वह इसी लक्ष्य की एक कड़ी है। पंजाब की सतलुज नदी की सहायक नदी काली बेन उपेक्षा के कारण गंदे नाले में परिवर्तित हो चुकी थी।

गरीब लोग जो अपनी आवश्यकताओं के लिए उस पर निर्भर थे, असंख्य कठिनाईयों का सामना कर रहे थे।

2004 में बलबीर सिंह ने निश्चय किया कि वह इस नदी को 'गंदे पानी का नाला' कहलाने के श्राप से मुक्ति दिला कर गरीबों को राहत दिलाएंगे। निश्चय निर्धारित करने के तुरंत बाद उन्होंने ग्रामीणों को जागृत करने का कार्य आरम्भ किया। स्वच्छ पानी के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उन्हें ललकारा, ''उठो, जागो! सड़ती हुई नदियों को जीवन–दान देने के लिए कमर कस लो। काली बेन नदी हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है। उसकी सफाई करो, पानी की सफाई में मानवता की भलाई है।''

बलबीर सिंह ने पहला कदम बढ़ाया और फिर जनता उन के साथ हो चली।

वह अकेले ही चले थे जानिब–ए–मंजिल मगर।
लोग साथ आते गये, कारवां बनता गया।

6 महीनों में उत्साही लोगों ने काली बेन नदी से कूड़ा, कचरा, गंदगी निकाल फेंकी। कल–कल करता पानी सब को लुभाने लगा। ''गंदा नाला'' बन गई काली बेन नदी शुद्ध सलिला के रूप में सामने आई और दूसरों को लाभ पहुँचाने का कार्य करने लगी। आज बलबीर सिंह को लोग 'काली बेन का उद्धारक' कहते हैं। पर्यावरण का यह प्रहरी इस स्नेहयुक्त उपाधि का सच्चा अधिकारी है।

बाल कहानी : वैदेही शर्मा

ईर्ष्या का फल

तालाब में बहुत सारे मेंढक रहते थे। उन सब मेंढकों का मुखिया बहुत ही सज्जन था लेकिन उन मेंढकों में चमकू मेंढक बहुत चालाक था। वह मुखिया मेंढक से बहुत जलता था, वह मुखिया मेंढक को मार कर स्वयं मुखिया बनना चाहता था।

चमकू मेंढक मुखिया को अपनी ताकत से नहीं मार सकता था। मुखिया से सभी मेंढक बहुत प्यार करते थे। एक दिन चमकू मेंढक घूमता हुआ पास के एक जंगल में चला गया। तभी एक सांप उस पर झपटा। सांप को देखकर चमकू घबरा गया लेकिन तभी वह सम्भलकर बोला, "अरे भाई! मुझे क्यों मार कर खाते हो? मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें ऐसी जगह ले चलता हूँ जहाँ तुम्हें सैकड़ों मेंढक खाने को मिल सकते हैं।"

चमकू की बात सुनकर सांप को लालच आ गया। सांप चमकू के साथ तालाब के पास पहुँचा। चमकू ने सांप से कहा, "देखो! इस तालाब में सैकड़ों मेंढक रहते हैं। मैं तुम्हारे लिए रोज एक मेंढक को अपने साथ लाऊंगा। तुम उस मेंढक को मार कर खा जाना।"

सांप ने चमकू की बात मान ली। सांप वहाँ एक पेड़ के नीचे बने बिल में छिप कर बैठ गया। चमकू अगले दिन सुबह एक मेंढक के

साथ वहाँ आया। तभी सांप ने झपटकर उस मेंढक को पकड़ लिया और पलक झपकते ही निगल गया।

अगले दिन चमकू फिर एक दूसरे मेंढक को साथ लेकर आया। सांप उस मेंढक पर झपटा और उसे भी निगल गया। एक–एक करके चमकू ने आधे से अधिक मेंढक सांप के शिकार बनवा दिये। एक दिन जब सारे मेंढक समाप्त हो गए तो चमकू ने मुखिया को भी सांप का शिकार बनवा दिया।

जब सारे मेंढक समाप्त हो गये तो सांप चमकू के बेटे को निगल गया। चमकू अपने बेटे की मौत से बहुत दुःखी हुआ लेकिन उस भयंकर सांप के सामने कर भी क्या सकता था? एक दिन सांप ने चमकू को ही पकड़ लिया। चमकू ने सांप से कहा, "मैंने तुम्हें इतने मेंढकों का शिकार कराया, अब तुम मुझे भी खा जाना चाहते हो। यह तो गलत बात है।"

"मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। अब तो तुम्हें ही खाकर पेट भरना होगा।" सांप ने कहा।

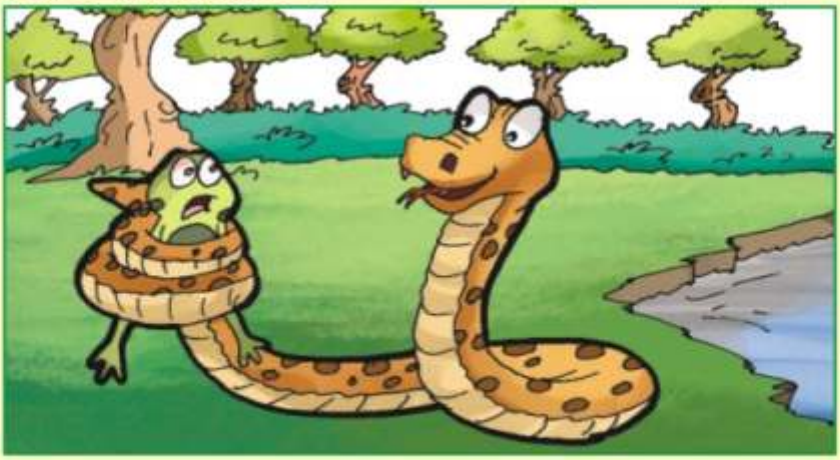

चमकू अपने फैलाये जाल में स्वयं फंस चुका था। वह अब मरता क्या करता। सांप उसे भी निगल गया।

किसी ने सच ही कहा है कि जो व्यक्ति अपने लोगों को धोखा देता है, एक दिन उसके साथ भी धोखा होता है। चमकू अपने परिवार के साथियों को समाप्त करवा देने के बावजूद वह नहीं बच सका और उसे भी अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। ■

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

पर्यावरण

आज समय की माँग यही है,
पर्यावरण बचाओ।

ध्वनि, मिट्टी, जलवायु आदि सब,
पर्यावरण हमारे।
जीव जगत के मित्र सभी ये,
जीवन देते सारे।
इनसे अपना नाता जोड़ो,
इनको मित्र बनाओ। पर्यावरण...

जब तक जीव जगत है जग में
जब तक जग में पानी।
जब तक वायु शुद्ध रहती है,
सौंधी मिट्टी रानी।
तब तक मानव का जीवन है,
यह सबको समझाओ। पर्यावरण...

बचाओ

हरियाली की महिमा समझो,
वृक्षों को पहचानो।
ये मानव के जीवन दाता,
इनको अपना मानो।
एक वृक्ष यदि कट जाए तो,
ग्यारह वृक्ष लगाओ। पर्यावरण...

जीव जगत की रक्षा करना,
अब कर्त्तव्य हमारा।
शोर और मिट्टी का संकट,
दूर करेंगे सारा।
एक वृक्ष हम नित रोपेंगे,
आज शपथ ये खाओ। पर्यावरण...

आज समय की मांग यही है,
पर्यावरण बचाओ!!

भैया से पूछो

– कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : भैया जी! बहुत दूर की सोच कर यदि कोई व्यक्ति चिंतित होता हो तो उसे क्या कहना चाहिए?

उत्तर : वह केवल चिन्तक है व्यवहारिक व समय पर उचित निर्णय लेने वाला नहीं है।

– सरिता (जयपुर)

प्रश्न : मैंने मन से सच्चा प्रयास किया परन्तु सफलता नहीं मिली। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : यूँ तो सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं जाता परन्तु फिर भी आप अपने प्रयास व ध्येय की दिशा को पुनः निर्धारित करें। दत्तचित्त होकर पुनः कर्म करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

प्रश्न : विशेष व श्रेष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर : कर्म, ज्ञान व भक्ति। इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वहीं कर्म विशेष व श्रेष्ठ है।

प्रश्न : संसार में सबसे उत्तम वस्तु क्या है?

उत्तर : सदाचार अर्थात् सद्चरित्र।

– सुनीता खुराना (हिसार)

प्रश्न : चिन्ता और चिन्तन में क्या अन्तर है?

उत्तर : चिन्ता नकारात्मक सोच है और चिन्तन सकारात्मक विचार।

प्रश्न : मनुष्य को हमेशा सत्य ही क्यों बोलना चाहिए?

उत्तर : क्योंकि सत्य उसे निर्भीकता और साहस प्रदान करता है।

– अनिता रानी (चण्डीगढ़)

प्रश्न : सबसे अच्छा उपदेश क्या है?

उत्तर : जिससे आत्म–दर्शन हो।

– चन्द्र प्रकाश कुकरेजा (वडसा)

प्रश्न : आदमी की बुद्धि नैसर्गिक देन है या कृत्रिमता से प्राप्त हो सकती है। क्या मनुष्य स्वयं भी बुद्धि का विकास कर सकता है?

उत्तर : बुद्धि तो ईश्वरीय देन है परन्तु यह संगत के प्रभाव से विकसित या कुंठित होती है।

– अशोक (नैनीताल)

प्रश्न : दुनिया में कौन–सी चीज़ सबसे कोमल और सबसे तेज धार वाली है?

उत्तर : केवल एक; मानव की जीभ।

– अमनप्रीत सिंह (काईनौर)

प्रश्न : किसी के साथ कैसा व्यवहार करके मन खुश होता है?

उत्तर : प्रभु–प्राप्ति कर मन से वैर, विरोध व दुर्भावना निकाल लें तो मन में प्रेम जाग जाता है।

प्रश्न : अच्छाई किन चीजों से प्राप्त होती है?

उत्तर : सत्संगति, सद्व्यवहार और सदाचार से।

– विरेन्द्र कालड़ा (लाधुका मण्डी)

प्रश्न : रब्ब (ईश्वर) कौन–सी उम्र में मिलता है?

उत्तर : किसी भी उम्र में।

प्रश्न : इन्सान की इज्जत किस चीज़ से बढ़ती है?

उत्तर : सद्चरित्र से।

प्रश्न : भक्ति में शक्ति का प्रमाण कब मिलता है?

उत्तर : पूर्ण भक्त की दशा देखकर।

– हरगुन जसवानी (मण्डला)

प्रश्न : आशावादी मनुष्य आशा का दामन कब छोड़ने लगता है?

उत्तर : जब आत्म–विश्वास में कमी आ जाती है।

प्रश्न : जिन्दगी का सच्चा सुख आपकी नजर में कौन–सा है?

उत्तर : आत्ममंथन के उपरान्त स्वयं की क्षमता पर विश्वास व इन्द्रियों पर नियंत्रण।

रोचक जानकारी : कमल सौगानी

पल पल आसमानी बिजली का कहर

आपको जानकर अचरज होगा, इस विशाल संसार में प्रति सैंकेंड आसमान से तकरीबन 90 बिजलियां गिरने की घटनाएं होती हैं। यानि की एक मिनट में 5400 बिजलियां धरती के सीने को चीर–फाड़कर समा जाती हैं।

अमेरिकी तड़ित जांच नेटवर्क के आंकड़ों के विश्लेषण से विदित हुआ है कि इन बिजलियों की चपेट में आने से संसार में प्रति मिनट 200 मनुष्य तथा 800 से 1500 पशु–पक्षी मौत के शिकार हो जाते हैं।

प्रकृति के हरे भरे सौन्दर्य को भी ये बिजलियां उजाड़ने से नहीं चुकती। बिजलियों के गिरने से विश्व में प्रति मिनट दो से तीन हजार पेड़–पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में पर्यावरण को तो ठेस पहुँचती ही है। इन बिजलियों की बदौलत ही नाइट्रोजन आक्साइड भी भारी मात्रा में उत्पन्न होने लगता है, जिससे काफी प्रदूषण बढ़ने लगता है।

आसमान से गिरने वाली एक सामान्य तड़ित में 75 किलो एम्पीयर करंट होता है। वर्षा के मौसम में जो तड़ित गिरती है, उनमें अधिक मात्रा में विद्युत वेग रहता है।

कटिबंध क्षेत्र में गिरने वाली बिजली लगभग 150 किलो एम्पीयर करंट की होती है। इसके करंट से हरे भरे पेड़ भी तेजी से आग पकड़ कर जलने लगते हैं।

जब बिजली गिरती है तो बादल से धरती तक करंट प्रवाहित होता है। इस करंट प्रवाह के मार्ग में तापमान काफी बढ़ जाता है। इस वजह

से नाइट्रोजन व आक्सीजन के अणु टूटते हैं और फिर से बनते हैं इस दौरान नाइट्रोजन आक्साइड भी भारी मात्रा में बनने लगती है।

विश्व में सबसे ज्यादा तड़ित गिरने की घटनाएं कटिबंध क्षेत्र में घटती हैं। चूँकि यहाँ की धरती खूब तपती है, जिस कारण वायु के झौंके ऊपर की ओर दम भरने लगते हैं और इन्हीं से गरजने वाले बादलों का निर्माण होता है। बादलों के घर्षण से बिजलियां उत्पन्न होती हैं और ये धड़ाधड़ यहीं की वादियों में गिरने लगती हैं, एक ताजा सर्वे के अनुसार यहाँ का पर्यावरण रात दिन प्रदूषण से जूझता रहता है।

उत्तरी गोलार्द्ध में भी तड़ित गिरने की कई घटनाएँ घटती हैं। 4 मार्च, 1923 को जब यहाँ भारी करंट वाली तड़ित गिरी तो जमीन में 50 मीटर तक एक विशाल गड्ढा हो गया, और यही गड्ढा नीले रंग के पानी से धीरे–धीरे भरने लगा। वैज्ञानिकों ने जब इस पानी का परीक्षण किया तो विदित हुआ कि यह अनेक रोगों में फायदेमंद है। बुखार से तपता व्यक्ति यदि इस पानी को पी लेता है तो उसका बुखार तुरन्त गायब हो जाता है। कुदरत का यह चमत्कार अब एक विशाल कुंड के रूप में बना हुआ है। देश–विदेश के कई पर्यटक आकर इस कुंड के पानी का चमत्कार आजमाते हैं। सचमुच कई रोगी बिल्कुल निरोगी हो जाते हैं।

ऐसे ही 6 अगस्त 1931 को साईबेरिया के एक विशाल पर्वत की चोटी पर बिजली गिरी थी। इस घटना के बाद पहाड़ की टूटी चोटी से पानी का झरना बहने लगा। वह झरना आज भी बह रहा है। इस झरने की बदौलत यहाँ की नदियां हरियाली से झूम उठी हैं। ■

बाल कथा : कमल सौगानी

मूर्ख क्यों कहलाने लगा गधा?

जंगल में एक दिन गधे ने सोचा – 'क्यों न एक अस्पताल खोला जाये। जिसमें कुबड़ों का इलाज किया जाये। कुबड़ों के इलाज से धन भी अधिक मिलेगा।'

बस, दूसरे ही दिन गधे ने जंगल के एक अखबार में विज्ञापन निकाला– "हर तरह के कुबड़ों का शर्तियां इलाज। सौ फीसदी कामयाबी।"

यह विज्ञापन पढ़कर जंगल का एक कुबड़ा भेड़िया उसके पास अपना इलाज कराने पहुँचा।

भेड़िया को जब आपरेशन रूम में ले गया तो वह बेहद खुश था। सोच रहा था– "कुबड़ ठीक हो जाएगी तो मुझे अपनी बिरादरी में फिर से सम्मिलित कर लेंगे।"

गधे के पास इलाज के काम आने वाले यंत्रों के नाम पर केवल दो लकड़ी के तख्ते थे। उसने एक तख्ते पर कुबड़े को लिटा दिया और दूसरा तख्ता उसके शरीर पर रखकर मजबूती के साथ बांध दिया।

इसके बाद वह उस पर खड़ा होकर जोर–जोर से कूदने लगा, इस तरह कुबड़े भेड़िया का शरीर तो सीधा हो गया, लेकिन उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

जब कुबड़े भेड़िया का बेटा गधे से बहस करने लगा, तो वह बोला – "मैंने सिर्फ मरीज के शरीर को सीधा करने की बात कही थी, उसके जीने मरने के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।"

यह सुनकर उसके बेटे ने अपना सिर जोरों से पीटते हुए कहा– "तुम सिर्फ पैसों के लालची हो, और अव्वल दर्जे के मूर्ख हो।"

तभी वहाँ वनदेवी प्रकट हुई और मृत भेड़िये के बेटे से बोली – "तुम भी इस गधे के चक्कर में कैसे पड़ गये' अब तुम्हारे पिता तो फिर से जीवित नहीं हो सकते। अच्छा तुम्ही बताओ इस गधे को क्या दण्ड दूं।"

भेड़िये का बेटा बोला– "इसे ऐसी सजा दो कि दुनिया के तमाम गधे इसकी खातिर हमेशा उपहास का शिकार बनते रहे।"

वन देवी ने कहा– "ठीक है, अब से पृथ्वी पर जन्म लेने वाला प्रत्येक गधा मूर्ख कहलाएगा, उसमें बुद्धि जरा भी नहीं रहेगी।"

बस, तब से ही गधे मूर्ख बन गये।

हानिकारक और लाभदायक बातें

हानिकारक बातें	लाभदायक बातें
● अधिक बोलना	★ शान्त स्वभाव
● व्यर्थ का भटकना	★ उत्साह
● अधिक शयन	★ सत्यनिष्ठा
● अधिक भोजन	★ धैर्य
● अधिक श्रृंगार	★ सहनशीलता
● हीन भावना	★ नम्रता
● अहंकार	★ समता
● झूठ बोलना	★ साहस

संग्रहकर्ता : शुभम अग्रवाल (खलीलाबाद)

बाल कविता : निखिल पाल

बादल आए – बादल आए

देखो–देखो बादल आए।
अपने संग खुशहाली लाए।
रिमझिम, रिमझिम जल बरसाएं।
देखो–देखो बादल आए।

मस्त सुहानी हवा चलाएं।
जोर–जोर बिजली कड़काएं।
धरती की ये प्यास बुझाएं।
देखो–देखों बादल आए।

रंगों का इन्द्रधनुष बनाएं।
इन्हें देख सब खुश हो जाएं।
नदियों को यह भरते जाएं।
देखो–देखो बादल आए।

आओ जानें जानकारी भरी बातें

- ★ मूंगफली की फसल के लिए गुजरात राज्य प्रसिद्ध है।
- ★ कोरबा 'हीरे' के कारण प्रसिद्ध है।
- ★ 'महानदी' पर हीराकुण्ड बाँध बनाया गया है।
- ★ बर्मा की मुद्रा का नाम 'क्यात' है।
- ★ भारत का प्रथम परमाणु शक्ति स्थल 'तारापुर' में स्थित है।
- ★ जहांगीर के दरबार में पक्षियों का सबसे बड़ा चित्रकार मंसूर था।
- ★ सिविल सेवा के लिए प्रतिस्पर्धा परीक्षा की व्यवस्था सिद्धान्त रूप में 1853 ई. में स्वीकार की गई।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल (गुड़गांव)

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : तालाब के जल को पीने से पहले उसे शुद्ध क्यों किया जाता है?

उत्तर : तालाब के जल में घुलनशील एवं अघुलनशील अशुद्धियां मौजूद रहती हैं। इन अशुद्धियों की उपस्थिति तालाब के पानी को पीने योग्य नहीं रहने देती, जिनसे अतिसार, टायफाइड और पीलिया जैसी बीमारियां हो सकती हैं। अतः पीने से पहले तालाब के पानी को अशुद्धियों से मुक्त करना जरूरी होता है।

प्रश्न : मकानों में दरवाज़ों के साथ–साथ रोशनदान क्यों लगाए जाते हैं?

उत्तर : हम सांस लेने के लिए ऑक्सीजन गैस का उपयोग करते हैं और अशुद्ध वायु कार्बन–डाई ऑक्साइड बाहर निकालते हैं। मनुष्य की सांस के साथ जो हवा बाहर निकलती है, वह गर्म तथा हल्की होती है। यह हल्की होने के कारण ऊपर की ओर उठती है। अतः सांस द्वारा छोड़ी गयी अशुद्ध वायु निकालने के लिए मकानों में रोशनदान लगाए जाते हैं तथा शुद्ध हवा के प्रवेश हेतु दरवाज़े।

प्रश्न : जलती आग के ऊपर समीप के वातावरण की अपेक्षा अधिक गर्मी क्यों होती है?

उत्तर : वायु के कण संवहन विधि से अंगीठी से उष्मा लेकर ऊपर की ओर उठते हैं। परिणामस्वरूप, ये कण अंगीठी के ऊपरी वातावरण को अधिक गर्म कर देते हैं तथा समीप के वातावरण को इतना गर्म नहीं कर पाते।

अनमोल वचन

★ शरीर मिशन नहीं, सिद्धान्त मिशन है।

–बाबा गुरबचन सिंह जी महाराज

★ मानव की शक्ति विनाश में नहीं, कल्याण में लगे।

– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

एक साहसी पक्षी: कोतवाल

कोतवाल दुबला–पतला फुर्तीला पक्षी है। इसका आकार बुलबुल के बराबर होता है तथा रंग भीमराज पक्षी के समान काला चमकीला होता है। इसका रंग ही नहीं और भी बहुत से गुण भीमराज से मिलते–जुलते हैं। उदाहरण के लिए इसकी दुम भी भीमराज के समान इसके शरीर से लम्बी होती है और अन्त में दो भागों में विभाजित हो जाती है। नर एवं मादा कोतवाल की शारीरिक संरचना देखने में एक जैसी होती है।

भारत में इसकी चार जातियां पायी जाती हैं, जिनकी दुम, चोंच तथा पंखों में थोड़ा बहुत अन्तर होता है। कोतवाल पक्षी भारत के प्रायः सभी भागों में पाया जाता है। इसे गाँवों के निकट खुले भागों में, खेतों के निकट चरते हुए पशुओं के शरीर पर तथा बिजली और टेलीफोन के तारों पर बैठे अक्सर देखा जा सकता है। इसका प्रमुख भोजन विभिन्न प्रकार के कीड़े–मकोड़े हैं। यह उड़ते हुए कीट–पतंगों को सीधे उड़ते हुए पलटकर अथवा झपट्टा मारकर पकड़ने में बड़ा कुशल होता है। जंगल में आग लगने से भागने वाले कीड़े–मकोड़े तथा जानवरों के चलने से उड़ने वाले कीड़े–मकोड़ों को यह कभी नहीं छोड़ता। कोतवाल बड़े–बड़े कीड़े–मकोड़ों का भी शिकार करता है। यह पहले उन्हें अपने पंजों में जकड़ लेता है और फिर उनके टुकड़े–टुकड़े कर के खा जाता है। टिड्डों तथा इसी प्रकार के अन्य कीड़े–मकोड़ों को खाने वाला पक्षी होने के कारण इसे किसानों का मित्र समझा जाता है।

कोतवाल की बोली बड़ी अप्रिय तथा कर्कश होती है। यह विभिन्न प्रकार के पक्षियों की नकल भी कर लेता है। शिकारी बाज की नकल तो

यह इतनी कुशलता से करता है कि पक्षी विशेषज्ञों को भी भ्रम हो जाता है।

कोतवाल का प्रजननकाल सामान्यतः अप्रैल से अगस्त तक होता है। इस मध्य यह भीमराज के समान भूमि से पन्द्रह से तीस फुट तक की ऊँचाई पर किसी वृक्ष पर घास–फूस, टहनियों, तिनकों और रेशों से ऐसे स्थान पर प्याले के आकार का घोंसला बनाता है, जहाँ वृक्ष की दो शाखाएं एक दूसरे से अलग होती है। घोंसला बनाने के बाद यह उसे मकड़ी के जाले की सहायता से वृक्ष की शाखाओं से अच्छी तरह चिपका देता है। इसी घोंसले में मादा कोतवाल एक बार में तीन से लेकर पाँच तक अण्डे देती है। इसके अण्डों पर लाल–भूरि चित्तियां होती हैं। अण्डों की देखभाल नर मादा दोनों मिलकर करते हैं।

कोतवाल एक साहसी पक्षी है। इसके घोंसले पर यदि बाज या इसी प्रकार का कोई शिकारी पक्षी आक्रमण करता है तो यह भागने के स्थान पर बहादुरी से उसका मुकाबला करता है और उसे भगा देता है। यही कारण है कि बहुत से पक्षी उसी वृक्ष पर अपना घोंसला बनाते हैं, जिस पर कोतवाल का घोंसला होता है। •••

अमूल्य वचन

– प्रस्तुति : महन्थ राजपाल

- ईश्वर और मनुष्य के बीच की एक कड़ी गुरू है।
- नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाता है।
- दूसरे को गिराने की कोशिश में हर कोई स्वयं ही गिर जाता है।
- अंधा वह नहीं है जिसकी आँखें नहीं है अंधा वह है जो अपने दोषों को ढकता है।
- सम्पन्नता मित्रता बढ़ाती है और विपत्ति उसकी परख करती है।
- धीरज के सामने भयंकर कष्ट भी धुएँ के बादलों की तरह उड़ जाते हैं।
- सद्गुरु की शरण ही सच्चा सुख है।
- समस्त भय व चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है।

पढ़ो और हँसो

एक कंजूस व्यक्ति को करंट लगा।
उसकी पत्नी ने पूछा : आप ठीक तो हो ना।
व्यक्ति बोला : मैं ठीक हूँ। तू मीटर देख, यूनिट कितना बढ़ा है।

आर्यन : भाई ये मेरे जामुन के पेड़ के नीचे तुम गुलाब का पौधा क्यों लगा रहे हो?
उज्ज्वल : ताकि ये दोनों मिल के हमें गुलाब–जामुन दे सकें।

– पुलकित (हरदेव नगर, दिल्ली)

ग्राहक : यह मच्छरदानी कितने की है?
दुकानदार : सौ रुपये की। इसमें कोई मच्छर नहीं घुस सकता।
ग्राहक : मुझे नहीं लेनी। जब इसमें मच्छर नहीं घुस सकता तो मैं कैसे घुस सकता हूँ?

माँ : रवि अंधेरे में क्या कर रहे हो?
रवि : टी.वी. देख रहा हूँ।
माँ : लेकिन लाइट तो है नहीं।
रवि : मोमबत्ती तो है।

– भारतभूषण शुक्ल (खलीलाबाद)

मरीज : (डॉक्टर से) मेरे पेट में दर्द हो रहा है।
डॉक्टर : कल कितनी रोटियां खाई थीं।
मरीज : 8 रोटियां
डॉक्टर : क्यों?
मरीज : 4 रोटियां आपने खाने के लिए कहा था और 4 रोटियां सामने वाले डॉक्टर ने।

अध्यापक : (शेरू से) तुमने कितने दिनों तक लगातार बारिश होते देखी है।
शेरू : एक दिन तक।
अध्यापक : क्या दो दिन तक बारिश नहीं हो सकती?
शेरू : नहीं सर! क्योंकि बीच में रात भी तो होती है।

रिक्शावाला : आइए साहब! कहाँ चलना है?
आदमी : मैं आई.ए. नहीं बी.ए. हूँ।

– वंदना चौधरी (दिल्ली)

यात्री : (तांगे वाले से) स्टेशन तक का कितना लोगे?
तांगेवाला : दस रुपये और सामान मुफ्त ले चलूंगा।
यात्री : अच्छा तो सामान ही ले चलो। मैं पैदल आता हूँ।

राजेश : (सुशील से) यार! आज तो सारा पेपर ही खाली ही दे आया हूँ। एक भी प्रश्न मैंने हल नहीं किया।
सुशील : मूर्ख ये क्या किया तूने। अब निरीक्षक यही सोचेंगे कि तुमने मेरी नकल की है।

– आशीष कुमार (दिल्ली)

दिनेश : मेरी कविताएं पढ़कर आपको कैसी लगी?
प्रवीण : मुझे लगा कि अब मैं भी कविताएं लिख सकता हूँ।

माधुरी : चलो सीमा तैरने चलें।
सीमा : माधुरी मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब तक तैरना न सीख लूँगी पानी के पास नहीं जाऊँगी।

महेश : सबसे पहली सुरंग किसने बनाई?
सुरेश : चूहों ने।

प्रवीन : अच्छा हुआ साहब मैं गुजरात में पैदा नहीं हुआ?
साहब : क्यों?
प्रवीन : क्यों कि मुझे गुजराती बिल्लकुल नहीं आती।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

मई अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम : सुधा चौधरी — आयु 13 वर्ष
35/1, मोती भवन
पोस्ट : जगत्दल
जिला : 24 परगना (बंगाल)

द्वितीय : सचिन कुमार — आयु 14 वर्ष
गाँव : सजुआ,
पोस्ट : हथिचौक
जिला : मुंगेर (बिहार)

तृतीय : रोहित चन्देल — आयु 13 वर्ष
कोटा हाउस, शाहजहां रोड
नई दिल्ली

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

अंशिता कुश्वाहा (जैतीपुर), अमनदीप सिंह (हरि नगर, दिल्ली), शैरोन (शिवालिक नगर, हरिद्वार), स्वाति (केडी नगर, गन्नौर), श्रद्धा गुप्ता (जलालपुर), आंचल (नरेला, दिल्ली), महक गुरबक्शानी (सिंधी कालोनी, भूसावल), श्वेता धरमपाल मनोचा, कुंज पटेल (अमरावती), कनिका सिंह (शिवपुर), तुषार बजाज (लाखा नगर, रायपुर), वंशिका (बरवाला रोड, डेरा बस्सी), दीपक (अश्वनी नगर, रायपुर), तुषार साहू (न्यू पंचशील नगर, रायपुर), वर्षा गुप्ता (सराय काले खां, नई दिल्ली), मुस्कान कुमारी दइया (पावर हाउस रोड, लक्ष्मणगढ़)

जुलाई अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 20 जुलाई **तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के सितम्बर अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

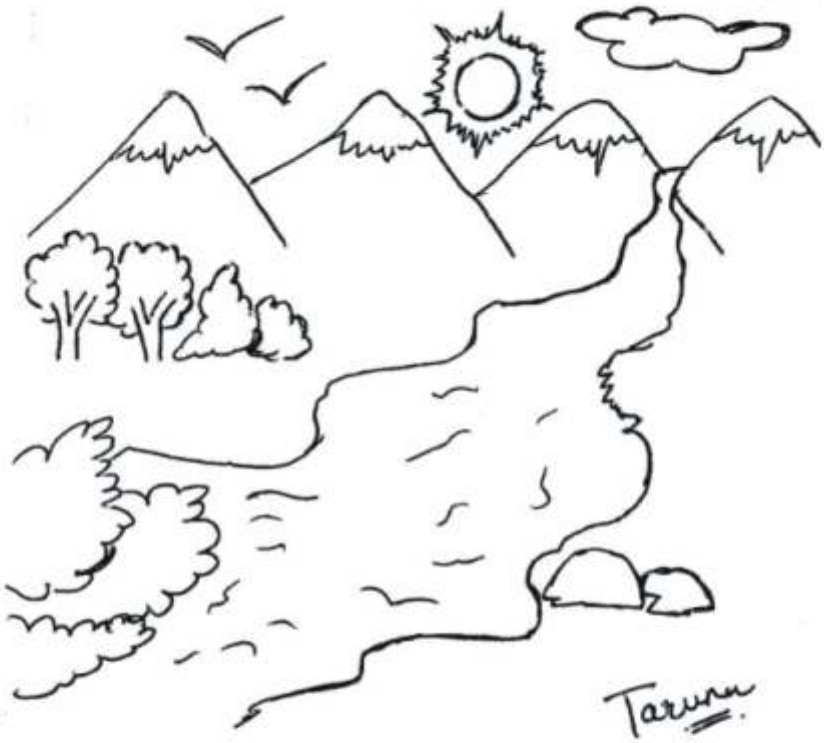

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट या CBS चैक द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली – 110009

नोट : ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660200 पर फोन कर के जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

नदियां

धरती का श्रृंगार नदियां,
प्रकृति का उपहार नदियां।
कलकल करती दिन और रात,
करती सागर से मुलाकात।
हिमालय का प्यार नदियां,
धरती का श्रृंगार नदियां।
इसके तट पर हवा सुहानी,
प्यार बुझाए इसका पानी।
खेतों की बहार नदियां,
धरती का श्रृंगार नदियां।
सोंधी मिट्टी ये महकाये,
तट पावन ये धाम बनाये।
जल का आधार नदियां,
धरती का श्रृंगार नदियां।

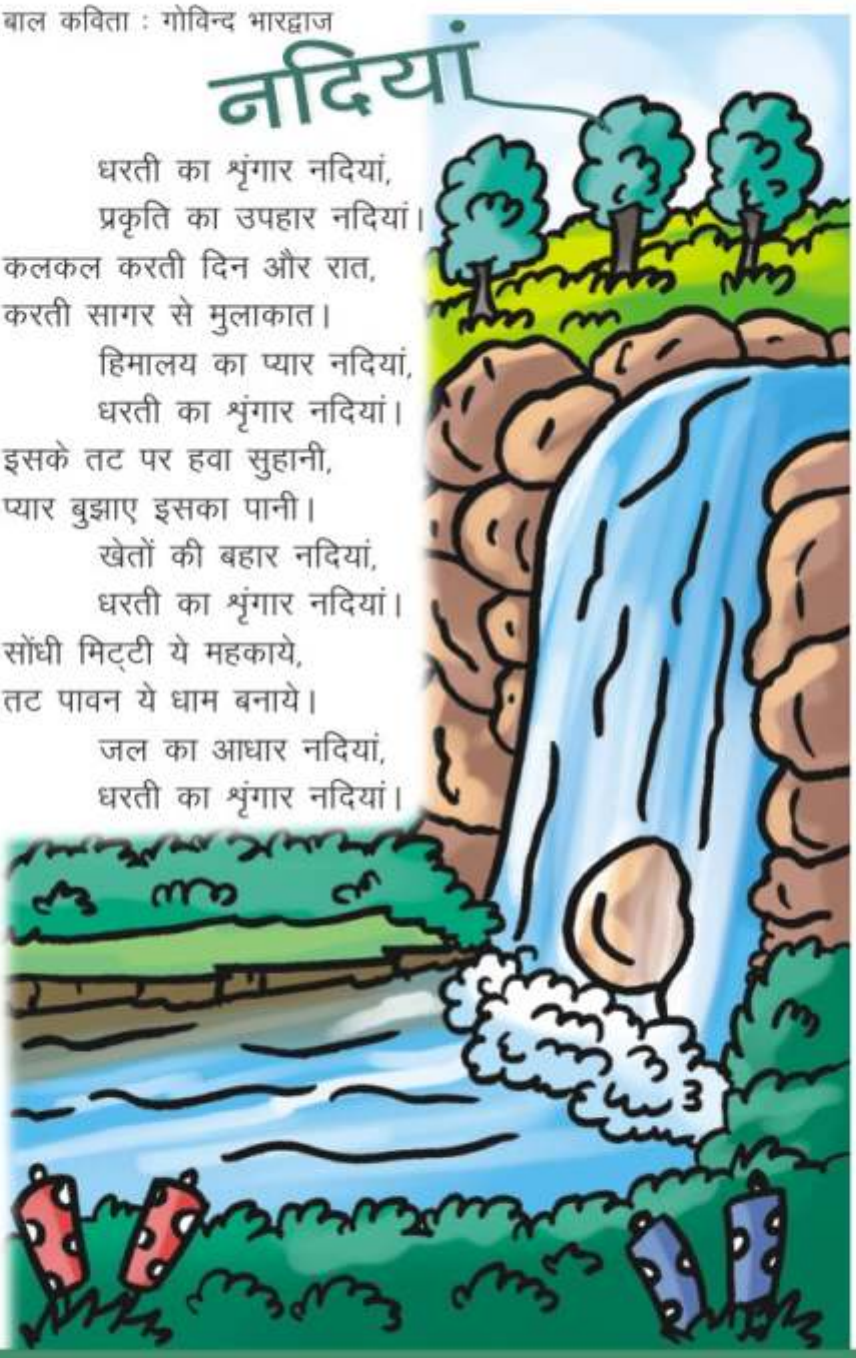

चम्पू
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
अरे कॉलेज का मज़ा कुछ और ही है। क्यों चम्पू।
सच में हैरी।
Hi Guys
Hi, आर्यमन, क्या हाल हैं।
Hi
अरे दोस्तों आज तो कुछ नये Admissions होने हैं।
चलो चल के देखते हैं।

अरे टीना तुम यहाँ।
Hi चम्पु, मेरा भी Admission इसी कॉलेज में हुआ है। और मेरे मित्र कबीर का भी।
देखते - ही - देखते ये सब अच्छे दोस्त बन गए।
कबीर बहुत स्मार्ट है,
हाँ सही कह रहे हो।

कबीर कल घूमने चलते हैं।
चम्पू ने भी अब स्मार्ट बनने की सोची।
चम्पू ने भी अब अपने आप को स्मार्ट बनाने की ठान ली।
और दो दिन बाद चम्पू कॉलेज में गया।
और अचानक सबको अपनी हँसी को रोकना कठिन हो गया था।

ये देख चम्पू अपने आँसू को रोक न सका, और उसी समय घर चला गया।
मैं स्मार्ट नहीं बन सकता
कुछ दिनों तक चम्पू को कॉलेज में न देख कर सबने उसके घर जाने का निश्चय किया।
सब भली-भाँति जान चुके थे कि चम्पू को क्या बात सता रही है।
सब दोस्तों ने चम्पू को समझाया।
तुम सब बहुत अच्छे हो।
चम्पू तुम खुद हीन भावना से ग्रसित हो। इसे अपने दिमाग से निकाल दो। तुम अपने ग्रुप में किसी और को शामिल करने से खुद अपनी मौजूदगी कम समझने लगते हो। चम्पू तुम जैसे हो वैसे बहुत सुंदर हो। हम सब वैसे ही हैं, जैसे थे।

फोटो फीचर

कुर्सी पर ठीक से बैठा भी नहीं और फोटो खींच ली।– ज्ञानवीर (रायपुर)

वाह! देखो मेरा तरबूज कितना बड़ा है। यह बैठने के काम भी आ रहा है।

बहन रोशनी मेरी तरह मुस्कुराते रहा करो। – पुन्वी पिण्टू (संजन, फनासपाडा)

फोटो ही मेरी गम्भीर मुद्रा में आई है, वैसे मैं मुस्कुराती रहती हूँ – रौशनी (सासाराम)

मैं गम्भीर दिख रही हूँ पर वास्तविकता में मैं हँसमुख हूँ। –मिस्टी रानी

हम बहनों की फोटो भी ऐसी ही गम्भीरता वाली हो गई है।– स्वास्ती (तेलीयागंज, इलाहाबाद)

फोटो फीचर

सहारा लेकर ही सही मैं अब खड़ा होने लगा हूँ। थोड़े दिन बाद स्कूल भी जाऊँगा।

जब पढ़ने लगोगे तब मेरी तरह हँसती दुनिया भी पढ़ना।
– आनन्दी पोपली

देखो नम्रता मेरी फ्रॉक कितनी सुन्दर है।
– आयुषि (जालना)

आयुषि बहन! मेरी ड्रेस भी बहुत सुन्दर है। – नम्रता (राजपुरा, जम्मू)

मैं हूँ बालसेवादार। हरदम सेवा को तैयार।
– ध्रुव (गाँधी

मैं भी बड़ी होकर सेवादल की सदस्य बनूंगी।
– प्रितिका तेजवानी (नहरपारा, रायपुर)

फोटो फीचर

इस बार गर्मियों की छुट्टियों में पहाड़ों पर जाकर खूब मजा आया। – योगिता

मैं तो गर्मी की छुट्टियों में झीलों के शहर उदयपुर गया था।
– अश्विन (दिल्ली)

छुट्टियों में मैंने अपना होमवर्क भी पूरा किया।
– नवजोत

हम तो टोरण्टो गये थे। वहाँ खूब घूमे–फिरे।
– विदित एवं तमन्ना (यू.एस.ए.)

मैं भी मम्मी–पापा के साथ शिमला घूमने गई थी।
– यशिका

छुट्टियां खत्म, अब चलो स्कूल जाने की तैयारी करें।– विधित

हाँ–हाँ घूमना–खेलना खत्म अब दिल लगाकर पढ़ें हम। पढ़– लिखकर आगे बढ़े हम। – वंदिता

विशेष लेख : मुकेश कुमार बतरा

चल पढ़, आगे बढ़, सफल हो

बच्चों, जब मैं आठवीं कक्षा में था तो पहली बार मुहल्ले में आठ–दस घर छोड़कर गणित पढ़ाने वाले भइया से गणित पढ़ने गया था। वापसी पर मुहल्ले की हर आंटी–अंकल, बड़े भइया–दीदी ने कहा था– 'मुकेश' क्या तुम पढ़ाई में कमजोर हो जो ट्यूशन पढ़ने जाते हो?' मैं बिना कोई उत्तर दिये घर लौटा और माँ की गोद में सिर रखकर रोया कि सब मुझे पढ़ाई में कमज़ोर कह रहे हैं। माँ ने बहुत समझाया तो मैं फिर सबकी नज़रों से छुपछुपाकर गणित पढ़ने जाने लगा। उस समय ट्यूशन पर जाकर पढ़ना शर्म की बात मानी जाती थी।

आज ट्यूशन जाना शर्म की बात नहीं गर्व की बात समझी जाने लगी है। आजकल 'ट्यूशन क्लासेस' का चलन बढ़ता जा रहा है। पालक और छात्र की यह सोच बनती जा रही है कि बिना ट्यूशन के टॉप पर पहुँचा ही नहीं जा सकता। लेकिन हकीकत यही है कि कितनी भी ट्यूशन क्लासेस 'जॉइन' की जाएं, बिना 'सेल्फ स्टडी' या मेहनत के अच्छे परिणाम प्राप्त कर पाना आसान नहीं है।

मेरे अनुसार पढ़ाई कितने घंटे की जाती है, इससे ज्यादा महत्व इस बात को दिया जाना चाहिए कि पढ़ाई का तरीका क्या है? पढ़ाई के लिए सही तरीका अपनाया जाना चाहिए। सही तरीके से यदि अध्ययन किया जाए तो परिणाम निश्चित रूप से सकारात्मक ही होगा। स्वयं अध्ययन करने का 'सिस्टमेटिक' (क्रमबद्ध) तरीका क्या होना चाहिए, इस पर विचार मंथन किया जाना चाहिए। 'आपो दीपो भव' के सुन्दर विचार प्रेरणा देते हैं। हमें स्वयं अपना दीपक बनना चाहिए।

बच्चों, चलो प्लान बनाते हैं या कहें जरूरी है प्लानिंग : कोई भी काम बिना प्लानिंग के किया जाए तो रिजल्ट उतना बेहतर नहीं मिलता। यही बात अध्ययन पर भी लागू होती है। पढ़ाई का टाइमटेबल बनाएं और पूरी योजना बनाएं कि किस तरह से पाठ्यक्रम (सिलेबस) पूरा करना है। जिससे पढ़ाई के साथ–साथ आराम भी मिलता रहे। अचानक तो परीक्षाएं सामने नहीं आती उनकी तिथियां घोषित की जाती हैं लेकिन लापरवाही के कारण छात्र हमेशा तिथियों को नज़रअंदाज कर देते हैं। जिसका दुष्परिणाम उन्हें भोगना पड़ता है। इसलिए पूरे वर्ष भर की प्लानिंग करें और उस पर डटे भी रहें।

समय का निर्धारण : हर विषय के लिए दिन में कुछ घंटे निर्धारित करें और इस बात को ध्यान में जरूर रखें कि किस विषय को कम समय देना है, किसको ज्यादा, दरअसल जो विषय आपको कठिन लगते हैं, उनके लिए ज्यादा समय रखें, क्योंकि कठिन विषय पर थोड़ी–सी ज्यादा मेहनत की जाएगी तो वो भी आसान लगने लगेगा। 'टाइम मैनेजमेंट' का छात्र जीवन में यदि दृढ़ता से पालन किया जाए तो सफलता कदम चुमती है। समय को व्यर्थ गंवाने वाले ही अक्सर समय की कमी बताते हैं।

निरंतर अभ्यास : मेरे गणित के अध्यापक जो कक्षा में पढ़ाते थे उसी से सम्बन्धित सवाल गृहकार्य में हल करने को देते थे। हम सभी छात्र उसे हल करके ले जाते थे। प्रतिदिन का गृहकार्य करना हमारी आदत बन गया था। कुछ विषय ऐसे होते हैं, जो बिना 'डेली प्रैक्टिस' (निरन्तर अभ्यास) के समझ नहीं आते। गणित ऐसा ही विषय है, जिसके लिए हर दिन अभ्यास की जरूरत होती है। हिंदी और अंग्रेजी विषय प्रतिदिन पढ़ना अनिवार्य है। यहाँ आलस्य बिल्कुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि एवरेज (पढ़ाई में साधारण) बच्चे भी रोज़ाना के अभ्यास से अच्छे अंक ला सकते हैं।

एक कदम कक्षा से आगे चलें : क्लास में कल क्या पढ़ाया जाने वाला है, उसे घर पर पहले से पढ़कर जाएं। ऐसा करने से जब वह पाठ कक्षा में पढ़ाया जाएगा तो आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ में आएगा। साथ ही

कक्षा में जो भी पढ़ाया जाता है, उसे भी घर आने के बाद जरूर पढ़ें, ताकि आपके दिमाग में विषय स्पष्ट हो जाए। इसके अलावा एक बार कोई विषय पढ़ लिया हो तो उसे दोबारा पढ़ें। हो सकता है एक बार में सारे 'पॉइंट्स क्लीयर' न हों। रिविजन (पुनः अभ्यास) करते वक्त एकाग्र रहे। कक्षा में कई बार ध्यान चूक जाता है। लिखकर देख लेने पर भी सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं।

मन का शांत होना अनिवार्य : बच्चों, पढ़ते–लिखते वक्त यह बहुत ही जरूरी है कि मन शान्त हो, तभी विषय (सब्जेक्ट) समझ में आएगा वरना घंटों किताब लेकर बैठे रहो, समझ में कुछ नहीं आएगा। पढ़ते वक्त यदि ध्यान भटकने लगे तो ज़ोर से बोलकर पढ़ें, क्योंकि शब्द जब ज़ोर–ज़ोर से सुनाई देते हैं, तो ज्यादा स्पष्ट रूप से याद होने लगते हैं। इसके बाद भी आपके चंचल मन की गति न थमे तो लिखने लगो। मुँह से बोलो, हाथ से लिखों, आँख से देखो, कान से सुनो सभी इंद्रियां व्यस्त हो जाएं तो मन शान्त हो ही जाता है। जब भी कुछ याद करें, तो बाद में किताब बंद करके उसे याद करने की कोशिश करें, कहीं भूलें तो नोट्स खोलकर देख लें, फिर दो–तीन बार बोल लें ताकि वह पक्की तरह से याद हो जाए। शान्त मन पाने के लिए शान्त वातावरण का चुनाव करें। निरंतर अभ्यास से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।

विषय पर चर्चा करें : लिखने–पढ़ने के साथ–साथ जब भी मौका मिले आप अपने सहपाठियों के साथ, भाई–बहनों के साथ, अपने माता–पिता व शिक्षक के साथ भी चर्चा करें। इससे आपका आत्म–विश्वास बढ़ेगा। कक्षा में शिक्षक जब भी प्रश्न करें तो ठीक–ठीक उत्तर देने का प्रयास करते रहें। सजग रहकर कक्षा में भी उचित प्रश्न पूछे। उत्तर से संतुष्ट होने पर शिक्षक को धन्यवाद दें। 'ग्रुप डिस्कशन' करेंगे तो यह भी पता चल जाएगा कि कौन–से 'पॉइंट्स' रह गए हैं, जहाँ आपको अभी और मेहनत की जरूरत है। चर्चा करने पर यदि आपको सुझाव मिलते हैं, नई जानकारी मिलती है तो समझदारी से आप उसका सदुपयोग करें, अपने ज्ञान को बढ़ाएं। वक्त आने पर पूरे जोश व होश के साथ समय का ध्यान रखते हुए उसका उपयोग करें।

पिछले प्रश्न–पत्रों को हल करें : आजकल तो हल किए हुए प्रश्न–पत्र मिलते हैं। आप यदि देखकर हल करेंगे तो लाभ होगा पर कम यदि आप केवल प्रश्न सामने रखेंगे और पाठ को पढ़कर किताब से देखकर हल करने का प्रयास करेंगे तो लाभ ही लाभ होगा। पढ़ाई के साथ–साथ उस विषय के नोट्स भी स्वयं ही बना लेना चाहिए, ताकि परीक्षा के दौरान पढ़ाई आसान हो जाए। पुराने प्रश्न–पत्र हल करने से यह पता चल जाता है कि किस तरह के प्रश्न–पत्र आते हैं। वर्तमान वर्ष में क्या महत्वपूर्ण प्रश्न है जो पूछे जा सकते हैं निरंतर अभ्यास से पता चल जाता है।

परीक्षा में बैठने से पहले समय–सारणी बनाएं : परीक्षा की तिथि घोषित होते ही सजग हो जाएं। सबसे पहले, जब परीक्षाएं करीब आने लगें तो समय–सारणी (टाइम–टेबल) बनाएं, किस विषय को कितनी देर पढ़ना है और कितनी देर ब्रेक लेना है। हर विषय उसके सिलेबस के लिए आवश्यकतानुसार समय–सारणी (टाइम–टेबल) बना लें। उसका पूरे मनोयोग से पालन करें।

अन्त में भगवान भरोसे न रहें बल्कि **आप** भरोसे से रहें। यह अच्छी तरह समझ लें कि पढ़ाई कोई उत्सव या पार्टी नहीं है, जिसकी तैयारी 15–20 दिन पहले से शुरू की और आराम से सफलतापूर्वक निबटा दिया। पढ़ाई विद्यार्थी जीवन का ऐसा हिस्सा है, जहाँ भविष्य की तैयारी होती है। इसलिए इसे सही तरीके से पूरा करना हर विद्यार्थी की पहली जिम्मेदारी है और यह तभी संभव है जब पूरे वर्ष सही तरीके से पढ़ाई की जाए। सफलता–असफलता हमारे द्वारा की गई मेहनत का फल है। जिनका कर्म में विश्वास होता है वे फल की चिंता नहीं करते। 'मेहनत के बिना सपने पूरे नहीं होते।' श्रम के बिना कुछ हासिल नहीं होता। बीज को भी अंकुरित करने और वृक्ष बनाने के लिए हमें नियमित खाद–पानी देना पड़ता है। इसके बिना बीज मर जाएगा। सफलता विश्वास से शुरू होती है। विश्वास पर ही खत्म होती है।

हँसती दुनिया पढ़िये, जीवन में आगे बढ़िये

बाल कविता : टेक ढींगरा 'चन्द'

विद्यालय हम नित जाएंगे

विद्यालय हम नित जाएंगे,
जीवन को सफल बनाएंगे।
हर ओर जो फैला अंधकार,
विद्या से दूर भगाएंगे।

दीन–दुःखी की करेंगे सेवा,
अच्छे इन्सान कहाएंगे।
भ्रम के जाल में नहीं फंसेंगे,
वैज्ञानिक सोच अपनायेंगे।

शान्ति में सदा तरक्की है,
यही संदेश फैलाएंगे।
देश पे डाले बुरी नज़र जो
उसको मार भगाएंगे।

हम बच्चे हैं भारत के,
मरने से न घबराएंगे।
नाम अमर दुनिया में होगा,
देश पे जान लुटाएंगे।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का आजीवन सदस्य हूँ। मैं इस पत्रिका को मैं बड़े ही चाव से पढ़ता हूँ। मुझे इसमें खासतौर पर 'कभी न भूलो', 'पढ़ो और हँसो' तथा कहानियां बहुत पसंद हैं।

– चन्द्रशेखर
(पुरानी सब्जी मण्डी, घड़साना)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे इससे अच्छी सीख मिलती है। मैं यह पत्रिका अपने साथियों को भी पढ़ने को देती हूँ। मुझे इसमें कहानियां, चित्रकथाएं व रंग भरो प्रतियोगिता बहुत अच्छी लगती हैं। मैं हँसती दुनिया की हर माह प्रतीक्षा करती हूँ। बड़ें भैया व छोटी बहन भी इसे रुचि से पढ़ते हैं।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार हर बार सभी के लिए ज्ञान का भण्डार लेकर आये।

– प्रसून बिष्ट (सीला)

मुझे हँसती दुनिया बेहद पसन्द है। मैं इसका बहुत समय से पाठक हूँ। यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास में बहुत सहायक है।

मई अंक में 'मदर्स–डे का उपहार' (नीरू तनेजा), 'समर्थ की निकटता' (डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी), तथा 'समय का सदुपयोग' कहानियां अच्छी लगीं।

कविताओं में 'जल का संचय' (राजन श्रीवास्तव) तथा 'बढ़ती गर्मी चढ़ता पारा' (हरजीत निषाद) पसंद आई। –कमलेश (पुरोहित का बास)

मैं हँसती दुनिया को नियमित रूप से पढ़ता हूँ। मुझे इसमें 'भैया से पूछो', 'पढ़ो और हँसो', 'कभी न भूलो', अच्छे लगते हैं। 'भैया से पूछो' में भैया बच्चों का अच्छा मार्गदर्शन करते हैं।

– राजकिशोर (दाहोद)

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया जो है पढ़ता।
जीवन में वह आगे बढ़ता।
कभी लड़ाई नहीं वो करता।
रंग खुशी के मन में भरता।
लेख, कहानी, कविता भाती।
सही मार्ग हमें दिखलाती।
मनमोहक इसकी रचनाएं
पढ़कर इन्हें चलो अपनाएं।

– दिनेश राय (आजमगढ़)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 व	सु	2 धा		3 ही	
ह		4 तु	5 का	रा	6 म
7 मी	8 रा		न		द
	क्ष		9 पु	ष्क	र
10 दि	स	11 पु	र		टे
व		ला		12 ता	रे
13 स	त्ता	व	न		सा

TU HI NIRANKAR

SUPER AQUA®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

SUPER AQUA®

R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of

Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact **09910103767**

Customer Care : **09810533767**

Delhi off. G-4/19, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-110085
Nr. Jain Bharti Public School

Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashtra, (M) 09930804105

0%
FINANCE

Email : superaqua1@gmail.com

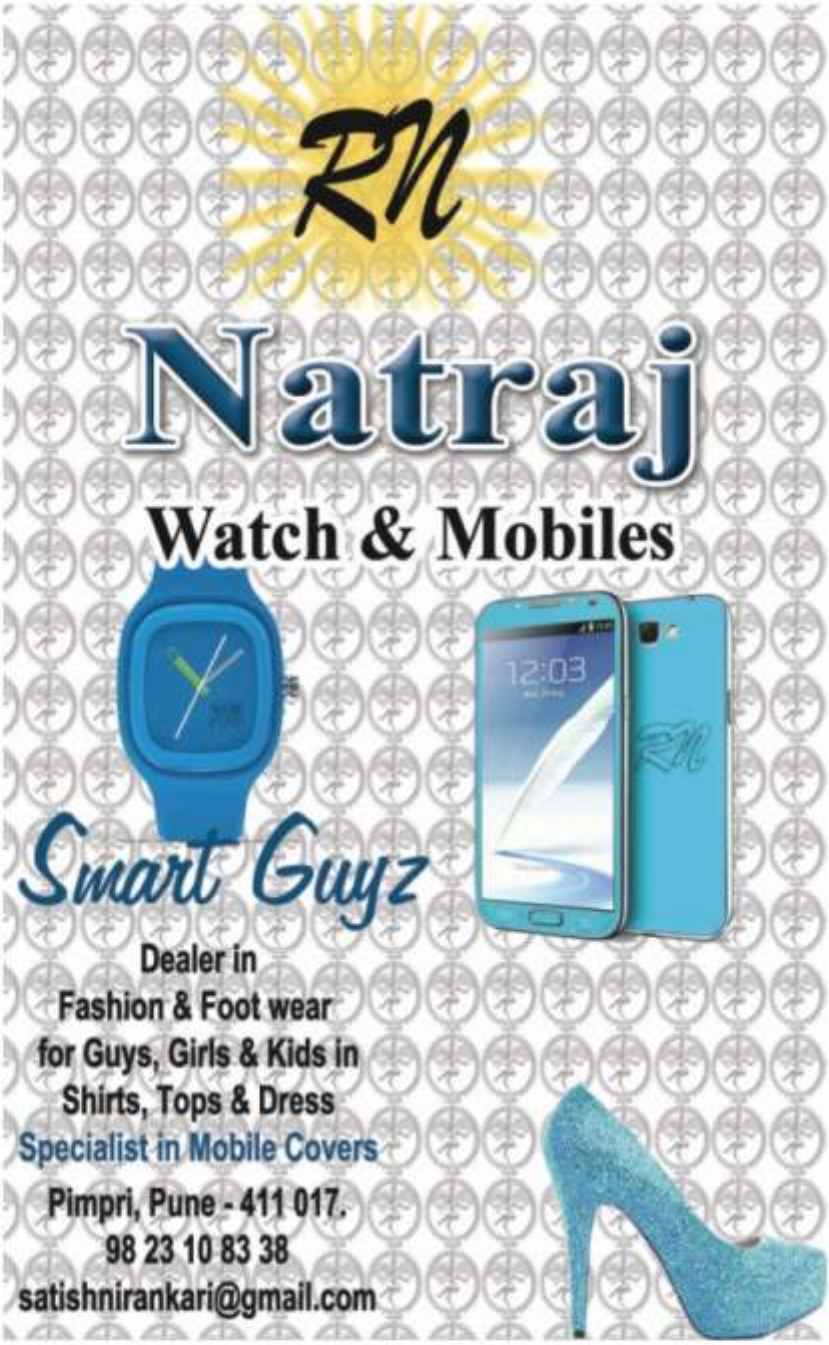
RN
Natraj
Watch & Mobiles
Smart Guyz
Dealer in
Fashion & Foot wear
for Guys, Girls & Kids in
Shirts, Tops & Dress
Specialist in Mobile Covers
Pimpri, Pune - 411 017.
98 23 10 83 38
satishnirankari@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

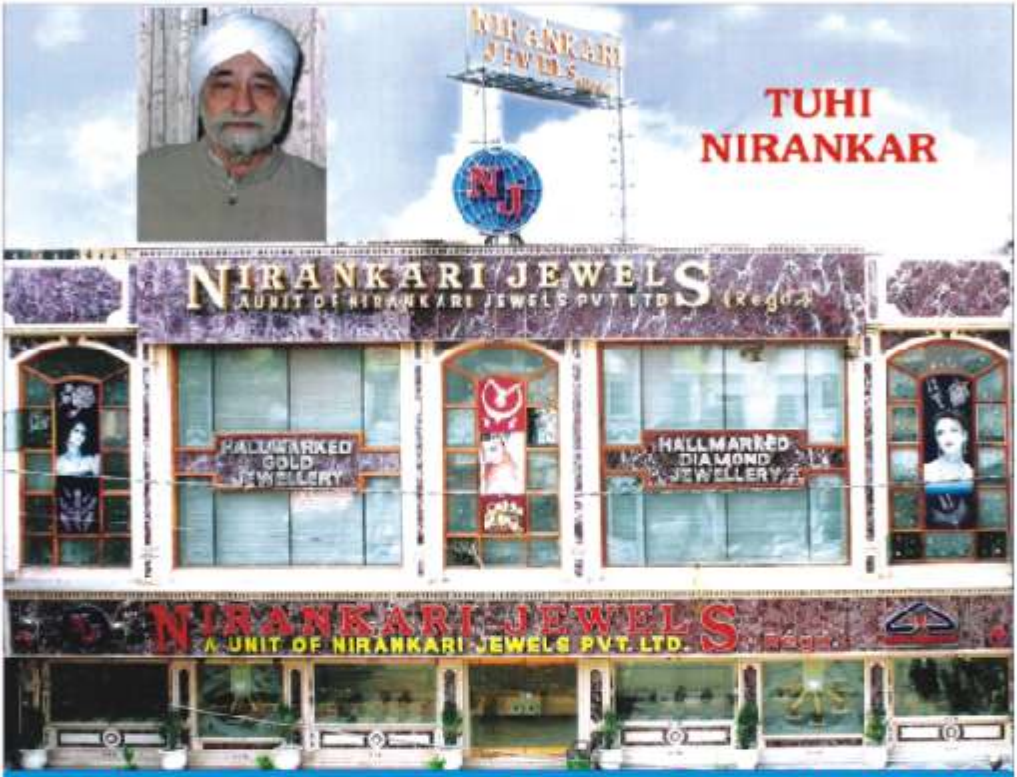

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)